भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 34 अंक : 6	15.11.2011 मंगलवार (नवंबर - दिसंबर)	शुल्क – प्रति अंक : ₹ 10.00 वार्षिक : ₹ 50.00

अन्नकूट कृपाप्रसाद

गुप्ताजी मैं आपसे ये जो बात कर रहा हूँ, उसे आप मिस इंटरप्रिट न करें। लालच की बात नहीं, पर मेरे मन में है कि जो अपने हैं, वे ये आशीर्वाद क्यों न उठा लें? मेरे मन में पहले से ही अपने पराए का भाव बहुत रहा है। समाज में मेरा यह इम्प्रेशन भी है कि गुरुजी के लिए बस जो अपने हैं, वे ही अपने हैं, दूसरों की इन्हें परवाह नहीं है। यह बात सही भी है और गलत भी है।

आज सुबह उठ कर मैंने मेरे जितने बड़े हैं, उन्हें फोन किया। फिर मैंने यहाँ किसी को फोन किया। वे शायद काफी समय से मुझे फोन मिला रहे होंगे, लेकिन मिला नहीं होगा और उन्हें मैसेज मिला होगा कि गुरुजी सेन्टरों में फोन कर रहे हैं। सो, उन्होंने वैसे ही मज़ाक में कहा ओहो हो, पहले अपनों को फोन कर लिया और फिर हमारा नंबर लगा। मैंने उनसे कहा कि ऐसी बात नहीं है। मैंने बचपन से देखा है कि **नए साल के दिन सुबह-सुबह हर कोई खास करके 'लक्ष्मीजी' के मंदिर तो जाता ही है।** यूँ मैंने आज नए साल के पहले दिन की सुबह अपने मंदिरों में – **जिन्हें मैं 'लक्ष्मीजी' और मंदिर की मूर्तियाँ समझता हूँ** – जैसे हमारे स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, साहेब इत्यादि को फोन किया है। बाकी अपना - पराया नहीं है, तुम भी मेरे हो।

जैसे मल्कानी अंकल ने बताया कि गुप्ताजी के प्रति पहले से हमें अपनेपन का भाव है। तो, मैंने भी सोचा कि जब मुफ़्त में एक चीज मिलती है, तो ये गुप्ताजी भी इसका फायदा क्यों न उठा लें? शायद सबने यह बात सुनी है कि फोर्टी एट में - आज़ादी के नेक्स्ट ईयर – जब पंडितजी ने गुलजारीलाल नंदाजी को दिल्ली बुलाया, तब वे मुंबई में लेबर यूनियन के वर्कर थे। मुंबई में शास्त्रीजी महाराज ने इन्हें सी - ऑफ करने के लिए एक छोटी - सी मीटिंग रखी। शास्त्रीजी महाराज के साथ योगीजी महाराज भी बैठे थे और शास्त्रीजी महाराज ने उन्हें आशीर्वाद दिया– *'आप दिल्ली जाओ, स्वामिनारायण का संदेशा फैलाना। आज महाराज जैसे मेरी सुनते हैं, वैसे ही इस साधु के समागम से तुम्हारी सुनेंगे; जाओ, दिल्ली की गद्दी पर बैठोगे।'*

ऑडिनरी लेबर यूनियन के वर्कर को उस समय इतने बड़े आशीर्वाद दे दिए! नंदाजी को सब जानते भी थे कि एग्रेसीव होना या लाइम लाइट में ज्यादा आना, उनका नॅचर नहीं था। साथ में बैठे हुए थोड़े जने हँसे, तो शास्त्री महाराज समझ गए। **शास्त्रीजी महाराज** ने कहा– *क्यों हँसते हो, एक बार नहीं दो बार बैठेगा।*

देखो, शास्त्रीजी महाराज ने कितने बड़े आशीर्वाद दिए। वो दो बार बैठे भी, पर संजोगवश शास्त्रीजी महाराज जो चाहते थे वो उस समय फुलफ़िल नहीं कर पाएं।

फिर नाइन्टीन सिक्टी सेवन में मुझे जब काकाजी ने पहली बार दिल्ली भेजा, तो बड़ौदा में हमारे एक पुराने सत्संगी हैं, भीखाकाका – उनके घर पर **काकाजी** ने मुझसे कहा –

देखो, शास्त्रीजी महाराज ने नंदाजी को ये आशीर्वाद दिए थे। अब हमें ये आशीर्वाद झेलने हैं। तुम अपनापन ('स्व' का भाव) छोड़कर सेवा में लग पड़ना; इसके फलस्वरूप महाराज तुम्हें ऐसी सेन्ट्लीनेस बख़्शिश दे देंगे कि सत्संग अपने आप तुम्हारे इर्द-गिर्द बढ़ता जाएगा।

मैं इसी रेफरेन्स में आपसे कहता हूँ कि अंकल ने जो बात की कि इस मंदिर से आप ऐसा संबंध बनाए रखो कि आपके दिल के कोने में रहे कि यह मंदिर मेरा है। हमारे मन में भी ऐसा बना रहे, हरिशंकरजी हमारे हैं...

इस बात का आप जरूर-जरूर विश्वास रखना कि इस मंदिर के साथ का संबंध आपकी हर प्रकार से तरक्की करेगा व आपको सुख-समृद्धि-स्पीरीच्युअल, पोलेटिकल, सोश्यल जरूर प्राप्त कराएगा। हमारे किसी फंक्शन का इन्वीटेशन आया हो-न आया हो, तो भी अपनेपन से आप जरूर आया करना। खास तो, मेरी ये इच्छा है कि **तीन, चार, पांच फरवरी-तीन तारीख को फ्राइडे है, फिर सैटरडे एण्ड सण्डे – आपको छुट्टी होगी**; बेशक, आप पब्लिक फिगर रही, फिर भी – आप अभी से तीन, चार, पाँच फरवरी हमारे साथ बुक रखना। इससे इतना बड़ा फायदा होगा कि आप इसको डिस्क्राइब भी नहीं कर पाओगे। **आपको ये इन्वीटेशन मुझे आज ओरली देना था...**

...एक बात तो समझनी पड़ेगी कि गुणातीत समाज दिव्य है और अक्षरधाम का है। यहाँ मंदिर में आने वाले या सत्संग से जुड़े हुए सब दिव्य ही हैं; यह एक पूरा सायन्स है। मैगनेट को छोटी कील लगा दो, तो वह अपने आप जुड़ जाती है। फिर वो कील भी मैगनेट बन जाती है। उस कील के पीछे एक दूसरी कील लगा दो, वह भी पहली कील के साथ जुड़ जाएगी, दूसरी कील के पीछे और लगा दो, मतलब मैगनेट के कॉन्टेक्ट में आकर लोहा भी मैगनेट बन गया। ऐसा ही लॉ ऑफ इन्डक्शन स्पीरिच्युआलिटी में है। ऐसे दिव्य संत के संबंध में आए हुए सब भक्त भी दूसरे चैतन्यों को खींच पाएं , ऐसे दिव्य बन जाते हैं। इसीलिए शायद गुणातीतानंदस्वामी ने मुक्तानंदस्वामी से कहा कि ओहो अक्षरधाम कितना दूर है; लेकिन तुम संकल्प करो, तो जैसे हाथ से कोई चीज फेंको और दूर पहुँच जाए, वैसे ही किसी भी चेतना के बारे में तुम संकल्प करो, तो वह जीव अक्षरधाम में पहुँच जाएगा। जैसे भगवान संकल्प करें और हम पहुँचे, वैसे ही ऐसे भक्त संकल्प करें, तब भी वो पहुँच जाए ...

भगत की व्याख्या जोगी महाराज ने बताई है। अक्षरपुरुषोत्तम का जिसे संबंध नहीं है, वो भगत ही नहीं है... स्वामी का कहना यह है कि भगवान का मानव स्वरूप में प्रागट्य अक्षरपुरुषोत्तम में ही हो सकता है... क्योंकि ब्रह्मरूप हुए बिना भगवान तुम्हारे अंदर अखंड निवास करके नहीं रहेंगे और ब्रह्मरूप तो ब्रह्मस्वरूप संत द्वारा ही हो सकता है। कितनी ही कोई साधना करे – सिद्धि वाला वह बन पाएगा; आशीर्वाद दे, वो सब हो पाएगा – लेकिन जीव को मोक्ष दे देना, वो तो प्रभु ऐसे संत के द्वारा ही करते हैं। **ऐसे संत की जिसे पहचान हो, वह 'भगत'**। व्रत करें, दान करे, तप करें, तीर्थाटन करें, सदाव्रत खोले-ठीक है। पर वे भगवान को प्रगटा नहीं सकते। हम कितने भाग्यशाली हैं कि जहाँ भगवान मानव स्वरूप में मौजूद हैं, ऐसे काकाजी, पप्पाजी की गोद में हमें बिठा दिया। फिर भी हमारे मन की हालत कैसी है – काकाजी ये बोलते थे – *भगवान की गोद में बैठे हो, पर रोते हुए देखाई देते हो।* कैसी कन्ट्रोवर्सियल बात आ गई न – विरोधाभासी ? भगवान की गोद में और रोते हुए ? मतलब, माना नहीं कि हम प्रभु की गोद में हैं। आज नए साल से यह मानना शुरु कर दें। आश्चर्यों की परंपरा हमारे जीवन में चालू हो जाएगी...

– प.पू. गुरुजी

स्वामिश्रीजी

सौरभ - ४०

संसार में जीवनयापन करने के लिए मुख्यतः दो ही क्षेत्र-नौकरी या व्यवसाय-होते हैं। मेरे परिवार में व्यवसाय करने का अनुभव दूर-दूर तक नहीं था। अतः मैंने भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर सन् १९६९ में नौकरी का क्षेत्र ही चुना। रिटायरमेन्ट तक विभिन्न पदों पर कार्य करने का अवसर मिला। मेरा अधिकतम समय 'दिल्ली विकास प्राधिकरण' के योजना विभाग में बीता।

सरकारी सेवा में प्रवेश से लेकर रिटायरमेन्ट तक एक ही लक्ष्य रहा है कि इस कार्यकाल में अपनी सांसारिक जिम्मेदारियाँ–जैसे बच्चों की पढ़ाई, शादी, रहने के लिए निजी मकान, वाहन इत्यादि को पूरा करने के लिए पर्याप्त धन मिल जाए और बच्चे पढ़-लिख कर अपना जीवन यापन करने के लिए समर्थ हो जाएँ और मैं रिटायरमेन्ट के बाद अपने क्षेत्र विशेष में कार्य करके अपनी आमदनी बढ़ा सकूँ। इन सांसारिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में कोई बाधा आड़े नहीं आई और जीवन सुचारु रूप से चलता रहा।

२७ वर्ष के 'दिल्ली विकास प्राधिकरण' के कार्यकाल के दौरान मुझे कई खट्टे-मीठे अनुभवों से गुजरना पड़ा। परंतु सन् १९८५ में एक बहुत ही अद्भुत और चमत्कारी उपलब्धि हुई, जिससे केवल सांसारिक सुख नहीं, अपितु **जीवन जीने की एक नई शैली**, जो कि बहुत ही कम लोगों को मिलती है-का बोध हुआ और आज भी उस पर चलने के लिए हृदय में उमंग रहती है और वह है–**'स्वामिनारायण मार्ग'**।

बात उन दिनों की है जब प.पू. गुरुजी ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की आज्ञा से, राजधानी दिल्ली में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की मूर्ति पधराने के ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज और गुरुहरि योगीजी महाराज के संकल्प को पूरा करने के लिए अशोकविहार में किराए की कोठी ए-१०३ में रहते थे। सन् १९८० में उनका परिचय मेरे मित्र और समकक्ष अधिकारी श्री चंद्रवल्लभजी से हुआ। उन्होंने गुरुजी को मुझसे मिलने का सुझाव दिया। यद्यपि मैंने अपने कार्यकाल में कार्यालय संबंधित कार्यों के लिए व्यक्तियों को घर आने के लिए न कभी प्रोत्साहित किया और न ही उनके आने पर सहजता का अनुभव किया। इसी प्रकृति को ध्यान में रख कर श्री चंद्रवल्लभजी ने मुझ से अनुरोध किया कि स्वामिनारायण संप्रदाय की योगी डिवाईन सोसाईटी के कुछ संत मुझसे घर पर मिलना चाहते हैं और मैं उनकी बात सुन लूँ। मैं इस अनुरोध को टाल नहीं सका। इस प्रकार प.पू. गुरुजी ने स्वयं मेरे घर आकर दर्शन देना प्रारंभ किया।

मुझे नहीं याद कि इस क्रम में कभी भी प.पू. गुरुजी ऑफिस में आए हो। जब भी प.पू. गुरुजी का आना होता तो वे सुबह-सुबह फोन करके पूछते–अग्रवालजी, आप क्या कर रहे हैं? हम आपके घर अभी आना चाहते हैं। यद्यपि सुबह का समय और वाईफ की भी सर्विस होने के कारण काफी टाईट स्कॅडयूल रहता था, फिर भी साधु-संतों के प्रति आदरभाव होने के कारण प.पू. गुरुजी को कभी मना नहीं कर पाया। मुझे ठीक से तो याद नहीं, लेकिन इस निमित्त प.पू. गुरुजी थोड़े ही समय में पाँच-छः बार घर पर आए। वे जब भी आते तो एक ही बात दोहराते कि हमारे गुरु काकाजी महाराज दिल्ली आते रहते हैं, आप उनके दर्शन करने जरूर आना। मैं भी 'हाँ' भर देता, लेकिन मन में कभी ऐसा भाव जाग्रत नहीं हुआ कि मुझे जाना ही है। बस यही सोच रहती कि ठीक है, अगर हो सका तो जाऊँगा और प.पू. गुरुजी का आग्रह भी जारी रहा। साथ ही वे यह भी कहते–हमारा काम हो न हो, आप हमारे गुरु के दर्शन के लिए जरूर आना। जहाँ तक काम का सवाल है,

तो वह तो ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज का संकल्प है और पूरा होना ही है। तो क्यों न आप सहाय बन कर उनके आशीर्वाद प्राप्त करने के योग्य बनें।

गुरुजी की बात हृदय को छू गई और मानो गुरुजी ने भी मुझे अपनी गोद में बिठाने का संकल्प पूरा कर लिया। लगभग २५ वर्ष वर्ष से अधिक के संबंध में प.पू. गुरुजी की जीवनशैली को पास से देखने का अनुभव हुआ है जो कि सिर्फ काकाजी के लिए पूर्ण रूप से समर्पण के अलावा कुछ भी नहीं। हर काम में काकाजी का पहले ध्यान करना। किसी भी प्रकार के प्रसंग पर धुन का सहारा लेना... इसी बीच व्यक्तिगत जीवन में बहुत से हृदयस्पर्शी और मार्मिक प्रसंग बने। उन प्रसंगों में से कुछ को आपके साथ शॅयर करने का यह एक छोटा-सा प्रयास है।

काकाजी के दर्शन – दिसंबर १९८५ में प.पू. काकाजी का दिल्ली आना हुआ। प.पू. गुरुजी का सुबह-सुबह फोन आया कि अग्रवालजी हमारे गुरु काकाजी आए हुए हैं। आपको सुविधा हो, तो मैं गाड़ी भेजूँ। मैंने भी सहज हाँ कर दी और उस समय सेवक निष्कामभाई मुझे मंदिर ले गए। प.पू. काकाजी ए-१०३ में मंदिर वाले कमरे में विराजमान थे। मैंने जाकर पैर छुए और बैठ गया। प.पू. गुरुजी ने काकाजी से मेरा परिचय करवाया और शायद मंदिर के कार्य के बारे में कोई बात भी नहीं की। काकाजी ने बस इतना ही कहा–तुम्हारे भाई और भाभी जो कार एक्सीडन्ट के कारण अस्पताल में भर्ती हैं, पूरी तरह ठीक हो जाएँगे। बस तुम यहाँ आ गए हो, तो मुकुंद के पास आते रहना। अपनी चिंता मुझ पर छोड़ दो। अन्य जो कुछ बातें की, वे तो मुझे याद नहीं। लेकिन लगभग **५-७ मिनिट उनके साथ समय बिताना जीवन का अविस्मरणीय अनुभव था।** यह सच है कि मेरे कज़िन भाई और भाभी का बहुत ही सीरियस एक्सीडन्ट हुआ था और दोनों तीरथराम अस्पताल में जीवन जीने की लड़ाई लड़ रहे थे और डॉक्टरों के अनुसार उनका ठीक होना और सामान्य जीवन जीना असंभव था। मुझे यह सोच कर आश्चर्य हुआ कि काकाजी को यह सब कैसे पता और मैंने भी उनके वचनों को आशीर्वाद न समझ कर एक गुरु की कही बात ही माना। आज भी मेरे भाई और भाभी हमारे बीच भौतिक रूप से विद्यमान हैं। मेरा यह मानना है कि यह सब काकाजी के आशीर्वाद का ही परिणाम है।

काकाजी का स्वधामगमन – प.पू. काकाजी के दर्शन के बाद भी शायद मैं खुद मंदिर नहीं गया, परंतु प.पू. गुरुजी के फोन आने व घर पर दर्शन देने का क्रम लगातार चलता ही रहा। वे मुझसे यही अनुरोध करते कि काकाजी १६ मार्च के करीब दिल्ली आने वाले हैं, तो आप जरुर आना। मैं भी हामी भर देता। ७ मार्च के दिन मैं खाना खाने के बाद जैसे ही लेटा कि थोड़ी नींद-सी आई। एकदम आँख खुल गई और ऐसा एहसास हुआ कि प.पू. काकाजी तो दिल्ली आकर चले गए, परंतु मुझे सूचना नहीं मिली। मन में ग्लानि भी हुई कि अगर मंदिर से सूचना नहीं आई थी, तो मुझे स्वयं ही मालूम कर लेना चाहिए था। थोड़े दिनों के बाद मेरी पत्नी ने प.पू. काकाजी के स्वधामगमन के हेतु होने वाली सभा की सूचना का पोस्टकार्ड दिया! वह पढ़ कर मैं सन्न रह गया और उस सभा में गया भी। इसके बाद कोई भी सूचना मिलने पर मेरा अकेले मंदिर जाने का नियम बन गया। **प.पू. काकाजी का स्वधामगमन होना मेरे लिए मंदिर से जुड़ने का सबब बना। जिस तरह उन्होंने पुराने हरिभक्तों को किसी न किसी रूप में अपने शरीर त्याग करने का सूचन किया, वैसे ही मुझ जैसे अल्प संबंधी को भी सूचित किया था।**

स्कूटर एक्सीडन्ट – धीरे-धीरे मंदिर की शनिवार सभा में और अन्य किसी सभा में मेरी पत्नी भी आतीं। एक दिन मंदिर से लौटते हुए संतनगर शमशान के पास मेरा स्कूटर गड्डे में गिर गया। मैं बेहोश हो गया और पत्नी को बाए हाथ पर चोट लगी। भीड़ इकट्ठी हो गई। किसी ने मेरी धर्मपत्नी से कहा कि आप इन्हें

अस्पताल ले जाओ और पूछा कि फोन कहाँ करना है। पत्नी ने उन्हें मंदिर और घर का नंबर दिया। साथ में बताया– 'मैं अपने घर के सामने गंगाराम अस्पताल में अपने पति अग्रवालजी को ले जा रही हूँ।' मेरा बेटा अस्पताल पहुँच चुका था। मुझे इमरजन्सी में अस्पताल में ले जा ही रहे थे कि प.भ. विजयभाई और एक अन्य हरिभक्त भी वहाँ पहुँच गए। मुझे जल्दी ही होश आ गया और सीटी स्केन इत्यादि भी ठीक आया। डाक्टरों ने फर्स्टएड देकर घर जाने के लिए कहा। इसी बीच मैंने प.भ. विजयभाई से कहा कि आप चले जाइए और गुरुजी को सूचित कर दीजिए। उन्होंने बड़ी नम्रतापूर्वक कहा–गुरुजी ने आज्ञा की है कि जब तक आप घर न आ जाओ, आपको अकेले नहीं छोड़ना। मेरी आँखें नम हो गईं। घर आने पर फोन पर रात को लगभग डेढ़ बजे फोन से प.पू. गुरुजी को स्थिति की सूचना दी और उसके एक घंटे के बाद वे भक्त गए।

छपिया यात्रा – एक बार प.पू. गुरुजी हरिभक्तों को छपिया 'श्रीजी महाराज के जन्म स्थल' ले गए। वहाँ ३-४ दिन रुकने के बाद वापिस आते हुए अयोध्या दर्शन करते हुए फैज़ाबाद रेलवे स्टेशन से हमें ट्रेन से दिल्ली आना था। स्टेशन पहुँचने पर पता चला कि ट्रेन १८ घंटे लेट है। उसके मुताबिक ट्रेन अगले दिन लगभग ११-१२ बजे तक आनी थी। वहाँ पर रात गुजारने के लिए कोई व्यवस्था नहीं थी और विशेष रूप से प.पू. गुरुजी को कहीं ठहराना मुश्किल था। सो, हरिभक्तों के बहुत आग्रह करने पर प.पू. गुरुजी प्लेन से दिल्ली आने के लिए राजी हुए। लखनऊ से दिल्ली पहुँच गए। हम तो निर्धारित ट्रेन से वापिस आ रहे थे। रास्ते में कानपुर या टूंडला स्टेशन पर कुछ रेलवे कर्मचारी हमारे कम्पार्टमेन्ट में आए और पूछा कि अशोकविहार मंदिर के हरिभक्त कौन हैं। हमारे बताने पर उन्होंने आलू की सब्जी और पूरी पर्याप्त मात्रा में वितरित की और कहा कि दिल्ली से किसी संत ने रेलवे अधिकारियों से ऐसा करने का निवेदन किया है। मुझे नहीं मालूम कि उन्होंने भुगतान किया है या नहीं। रेलवे का रवैया है कि अकसर जो गाड़ी लेट हो जाती है, उस गाड़ी को ही आवश्यकता पड़ने पर रोका जाता है; समय से चलने वाली ट्रेन को पहले क्लीयरन्स दी जाती है। परंतु हमारी ट्रेन को सामान्य ट्रेन की तरह क्लीयरन्स दी गई। यूँ लेट पिरीयड को भी कवर करते हुए हम दिल्ली पहुँच गए। गुरुजी नीचे वाले हॉल में बड़ी बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। **हरिभक्तों को देखते ही उनके चेहरे पर जो प्रसन्नता का भाव देखा वो मूर्ति अभी भी आंखों से ओझल नहीं हो पाती है।** गुरुजी का भक्तों के भोजन की व्यवस्था करना, ट्रेन का रेग्युलर ट्रेन की तरह से क्लीयरन्स दिलवाना **गुरुजी की भक्तों के प्रति संवेदना और सेवाभाव दर्शाता है।** हम विचार करें कि क्या हम अपने परिवार या अतिशय आत्मीय स्वजन के लिए इतना कुछ करने की बात तो अलग, सोच भी सकते हैं।

चिन्तन का जन्म दिन – बात सन् २००० की है मेरे बेटे का जन्मदिन २२ जुलाई का होता है। परिवार में किसी का जन्मदिन हो तो शुभकामना देने के लिए गुरुजी और दीदी का सुबह-सुबह फोन जरूर आता है और हम भी मंदिर में गुरुजी के दर्शन करने व आशीर्वाद लेने के लिए जरूर आते ही हैं। इस साल भी कुछ ऐसा ही हुआ। हमारा शाम को मंदिर आने का कार्यक्रम था। लगभग २-३ साल पहले सत्संग से जुड़े मित्र तपन मजूमदार ने मुझे बताया कि उस दिन गुरुजी शाम को ४-५ बजे हमारे घर आने वाले हैं और उन्हें कुछ काम है। आप और भाभी घर जल्दी जाएँ। मैंने उनसे आने का प्रयोजन पूछा तो उन्होंने कुछ भी बताने से इंकार कर दिया। बड़ा असमंजस था; गुरुजी आज्ञा करते तो हम लोग स्वयं ही मंदिर चले जाते। दुविधा बढ़ती ही गई। निश्चित समय पर हम दोनों ऑफिस से जल्दी आ गए। जब हम लोग गुरुजी के आने के हेतु नाश्ते आदि का प्रबंध कर रहे थे, तभी तपन मजूमदार भी आ गए। उन्होंने बताया कि गुरुजी का फोन आया है कि अग्रवालजी

से नाश्ते की व्यवस्था करने के लिए मना कर दो। केवल दो संत ही आ रहे हैं। वे केवल १० मिनिट रुकेंगे। इसके बाद उन्हें कहीं और जाना है। बहुत कहने पर भी तपन मना ही करते रहे। हम लोग बस गुरुजी के आने का इंतजार करने लगे और बीच-बीच में तपन कहते कि भाई साहब आपने क्या कर दिया कि गुरुजी को आपके घर आना पड़ रहा है और उन्होंने नाश्ते तक के लिए मना कर दिया है। लगता है गुरुजी नाराज हैं। सोचकर भी ऐसा कोई प्रसंग याद नहीं आया। असमंजस और भी बढ़ता गया। उसी समय गुरुजी की कार आ गई। मैं और चिंतन दरवाजे की ओर भागे–देखा गुरुजी १५-२० हरिभक्तों, दीदी और कुछ भगवाधारी बहनों और १०-१५ सत्संगी बहनों के साथ आ रहे हैं और तब पता चला कि गुरुजी मेरे बेटे चिंतन का जन्मदिन हमारे घर पर मनाने के लिए आए हैं और साथ में नाश्ते के लिए सामान केक, गिफ्ट, चाय, गिलास सभी चीजें लाए हैं। गुरुजी का परिवार के प्रति अपार प्रेम देखकर मेरी आंखें नम हो गईं और हम सबने मिलकर चिंतन के जीवन का अद्‌भुत और चिरस्मरणीय जन्म दिन मनाया। जब भी मैं और मेरी पत्नी इस प्रसंग को याद करते, तो सहज ही गुरुजी के प्रति श्रद्धाभाव बढ़ता जाता–बढ़ता ही जाता और चिंतन भी इस जन्मदिन को आज तक सर्वश्रेष्ठ जन्मदिन मानता है।

वात्सल्य प्रेम – एक बार मैं सुबह के समय अपने पोते रुद्राक्ष को लेकर मंदिर गया। उसी समय गुरुजी के लिए खीरा टमाटर आया और गुरुजी ने रुद्राक्ष को खीरे का एक पीस दिया। उसने जल्दी ही खा लिया। गुरुजी ने उसे एक और पीस दिया उसने उसे भी खा लिया। यह क्रम चलता ही रहा! अंत में मैंने देखा कि गुरुजी ने शायद ३-४ पीस खाये जबकि सारा सलाद रुद्राक्ष ने ही खा लिया। बाद में भी जब भी रुद्राक्ष मंदिर आता तो गुरुजी उसे कुछ खीरे और टमाटर खाने को देते। कभी मंदिर में खीरे टमाटर नहीं होते, तो तुरंत बाजार से मंगवा कर देते और एक बार तो उसके जन्मदिन पर खीरे टमाटर की टोकरी सजाकर भेंट भी दी। सच में यह एक अनूठा अनुभव है। **हर किसी छोटे-बड़े की पसंद नापसन्द का ख्याल रखना और उसे व्यवहार में लाना कोई प्रभुधारक संत ही कर सकते हैं।**

इस प्रकार यदि मैं सत्संग के २७ वर्ष की अवधि के संस्मरण लिखता रहूं, तो शायद आधी से ज्यादा पत्रिका उसी से भर जाए। इसलिए यहीं विराम देते हुए बस इतना कहूंगा कि **सांसारिक जीवन के हर एक प्रसंग में**–जैसे बच्चों की शादी, घर में किसी की बीमारी या मृत्यु के समय **केवल गुरुजी और दीदी को ही नहीं, बल्कि सारे सत्संग समाज को अपने साथ खड़ा पाया है। मेरे बेटे चिंतन** को मिले संस्कार भी गुरुजी की असीम करुणा, हरिभक्तों को सदा काकाजी से जोड़ने का प्रयत्न और सत्संग का ही परिणाम है कि **वह अपने मित्रों से सदैव यही कहता है कि पेरेन्ट्स मेरे साथ नहीं, मैं पेरेन्ट्स के साथ रहता हूँ। एक सत्संगी और संस्कारी बच्चे के अलावा ऐसा उत्तर कोई दे ही नहीं सकता।**

अंत में श्रीजी महाराज के चरणों में इतनी ही प्रार्थना कि यदि गुरुजी ने हठ करके (जबरन्) अपनी गोद लिया और बाल्य अवस्था में हमारे बच्चों को 'सत्संग' की दिशा दिखाई, तो मैं भी अपने अंत समय तक प.पू. गुरुजी की उंगली पकड़ कर चलता रहूं-चलता ही रहूं और शेष जीवन के हर प्रसंग पर काकाजी और गुरुजी को याद रखूं। हमारे सत्संग की धुरी रूपी आत्मा प.पू. गुरुजी को शतायु और स्वस्थ जीवन दें और अंत में इतना ही कि– *'हरा अनुग्रह.... मेरी ऐसी नज़र कर दो।'*

– एन.के. अग्रवाल, दिल्ली

स्वामिश्रीजी

सौरभ - ४१

प.पू. काकाजी के दर्शन करने का पहला सौभाग्य १९८२ में कुरुक्षेत्र में हुआ। वे सभा कर रहे थे। उन्हें नमन करके जैसे ही मैं बैठा काकाजी महाराज ने कहा – *सरदारजी, क्या मैं आपके सिर के बाल काट दूं।* मेरे मुंह से तुरंत निकला – *जी काकाजी!* काकाजी बोले – *यह है विश्वास, उसकी पगड़ी की इज्जत मेरी पगड़ी की इज्जत।* मैं यह सोच भी नहीं सकता था कि काकाजी ऐसा पूछेंगे और मैं 'हाँ' कह दूंगा। यह सब उनकी कृपा से ही हुआ।

प.पू. काकाजी के संपर्क में आया, तब मेरी दो बेटियाँ थीं। काकाजी जून-जुलाई में लुधियाना आए, तब उन्होंने मुझसे कहा –

जब आपका बाबा ३ दिन का होगा, मैं टीका करने आऊंगा।

५ अगस्त १९८२ की रात को बेटे का जन्म हुआ। ६ अगस्त १९८२ को पू. रमेशभाई आए और कहा कल सुबह प.पू. काकाजी महाराज मुबंई से आपके बेटे को टीका करने आ रहे हैं। ७ अगस्त १९८२ की सुबह प.पू. काकाजी महाराज घर आए और आते ही बेटे को लाड़-प्यार करने लगे। वह भी ऐसा व्यवहार करने लगा जैसे उन्हें पहचानता हो। प.पू. काकाजी महाराज ने मानो उससे पूछा – *पहचानाता है ?* वह खूब हाथ-पांव मारने लगा। प.पू. काकाजी महाराज बोले –

यह ऑर्डिनरी आत्मा नहीं है; हमारे संत ने शरीर छोड़ा है, वही आत्मा है।

असल में बेटे का सिर बीच में पूरा गंजा था, लंबी चोटी थी।

पटियाला में मेरी मिसेस के मायके में कोई मेईल इश्यु नहीं था। मिसेस को स्वप्न आता था कि एक लड़का उसकी झोली में आ रहा है, पर सफ़ेद कपड़े वाले एक संत उसे लड़की में बदल देते हैं। यह सुन कर प.पू. काकाजी ने कहा कि आपके मायके वालों ने किसी संत को दुःखी किया है, उसकी वजह से ऐसा है। पर अब ठीक हो जाएगा। वैसा ही हुआ। प.पू. काकाजी महाराज ने पू. कांतिभाई को वहाँ भेज कर '**महापूजा**' करवाई और उनके यहाँ बेटे का जन्म हुआ।

प.पू. काकाजी महाराज में खासियत यह थी कि जिसे जिस भी चीज की जरूरत होती थी – संतान, पैसा, प्रोपर्टी, शादी वगैरह वे पूरी करते और जीव का उद्धार करते रहते।

एक बार शाम को मैं प.पू. काकाजी महाराज के दर्शन करने के लिए ए-१०३ मंदिर, अशोकविहार जा रहा था कि रास्ते में ही प.पू. काकाजी महाराज के दर्शन तो हुए, पर गुरुजी से मिला तो उन्होंने बताया कि काकाजी अभी-अभी कुरुक्षेत्र गए हैं। गुरुजी ने मेरे लिए चाय मंगवाई। मेरी मम्मी ने मुझे कह कर भेजा था कि मेरी बहन जो लंडन रहती है, उसकी नौकरी के लिए काकाजी से प्रार्थना करना – आशीर्वाद मांगना। इंसान की फितरत ही ऐसी है। मेरे मन में आया कि काकाजी कुरुक्षेत्र हैं; शाम का समय है तो मैं वापसी की बस पकड़ कर रात को ही कुरुक्षेत्र पहुंच जाऊँ। इधर प.पू. गुरुजी से बहन की सर्विस के लिए आशीर्वाद मांगे। प.पू. गुरुजी विचार करते रहे; फिर दूसरी बार प्रार्थना की लेकिन... तो, मेरे मन में आया कि मम्मी से कहूँगा कि संतों से कह दिया था। पर झूठ बोलने को मेरा मन नहीं माना। फिर तीसरी बार मैंने जब आशीर्वाद मांगे तो

प.पू. गुरुजी तुरंत बोले – *गुरुबख़्श सिंह, आशीर्वाद मांगे नहीं जाते, छीने जाते हैं।* उस समय पूरा अर्थ मालूम नहीं हुआ था, पर धीरे-धीरे पूरी बात क्लीयर हो गई। प.पू. गुरुजी को 'जय स्वामिनारायण' कह कर रात को कुरुक्षेत्र पहुंचा। वहाँ पू. प्रेमजीभाई बोले कि काकाजी महाराज तो यहां पहुंचे ही नहीं। अगले दिन सुबह वहां से मैं लुधियाना के लिए चला गया। प.पू. काकाजी और प.पू. गुरुजी की कृपा से बहन को बहुत अच्छी गवर्नमेन्ट जॉब मिल गई थी।

जब भी काकाजी महाराज लुधियाना आते, ऐसा लगता जैसे शादी का माहौल हो। चारों ओर आनंद ही आनंद। एक बार काकाजी महाराज घर पर बैठे थे माताजी ने कहा – काकाजी, *कमल (प.भ. कमल खुरानाजी) के घर भी बेटा दे दो।* काकाजी बोले – *माताजी पहले बेटी होगी, फिर ५ साल के बाद बेटा होगा।* वैसा ही हुआ।

एक बार मेरे मित्र **डॉ. रंजीत सिंह** होरोस्कोप दिखाने मेरे पास आए। मैं प.पू. गुरुजी के दर्शन करने के लिए प.भ. गुप्ताजी के घर जाने वाला था। मैंने कहा डॉ. साहब चलिए, आपको असली होरोस्कोप दिखाते हैं। वहां पहुंच कर मैंने कहा – *गुरुजी ये मेरे मित्र हैं, कनाडा जा रहे हैं।* गुरुजी तुरंत बोले – *सरदारजी, डॉलर कमाने जाना है।* वे बोले – *जी गुरुजी।* गुरुजी ने प्रसादी के रूप में सेवक से उन्हें १२५ रुपए दिलवाए। **गुरुजी ने कहा – *अपने पास रखना; खूब डॉलर कमाओगे।* आज उन पर लक्ष्मीजी की पूरी कृपा है, खूब कमा रहे हैं।**

मैंने गुरुजी से कहा – *काकाजी ने भी मुझे प्रसादी रूप १२५ रुपए दिए थे, पर मालूम नहीं कहाँ गए।* गुरुजी ने मुझे भी प्रसादी के पैसे दिलवाए और कहा वही चीज समझना। बाद में समझ आया, **गुरुजी के रूप में काकाजी ही हैं।**

मेरा बेटा 'ज्ञान' एक बार प.भ. रामपालजी के साथ दिल्ली मंदिर प.पू. गुरुजी के दर्शन करने के लिए गया था। फोन पर पहले सूचित भी कर चुके थे। पर, प.पू. गुरुजी किसी जरूरी काम के लिए बाहर गए थे। इस दौरान ज्ञान फार्म पर संतों से मिलने के लिए गया और वहां बड़ौदा जाने के लिए पक्का करके दिल्ली स्टेशन पर चला गया। संत तो बाय एयर चले गये थे। स्टेशन जाने पर ज्ञान को पता चला कि ट्रेन कैंसिल हो गई और वह दोबारा मंदिर आकर सो गया। रात को प.पू. गुरुजी मंदिर आए और प.भ. रामपालजी से पूछा – ज्ञान कहां है। उन्होंने कहा – वह सो रहा है। गुरुजी ने कहा – *उसे बुला कर लाओ।* जब ज्ञान आया तो प.पू. गुरुजी तुरंत बोले – *ज्ञान, तेरे पीछे आज गाड़ी कैंसिल करनी पड़ी, क्योंकि तू दिल्ली दर्शन करने के लिए आया था और बिना दर्शन किए जा रहा था।*

प.पू. काकाजी जब आख़िरी बार लुधियाना हमारे घर बैठे थे, तब बोले–

अब मैं पंजाब नहीं आऊंगा, मिलना हो तो दिल्ली आना।

उस समय उनके कहने का अभिप्राय नहीं समझ पाए,पर वैसा ही हुआ। ऐसे कुछ प्रसंग नहीं, अनेकों प्रसंग हैं पर लिखने के लिए शब्द नहीं... अंत में प.पू. स्वामिजी, प.पू. गुरुजी के चरणों में यही विनती है – हम निमित्त बनें और जैसा प.पू. काकाजी महाराज हम से वर्तने की उम्मीद रखते थे, उस मार्ग पर चल सकें और उन्हें प्रसन्न करके आशीर्वाद छीन सकें – यही अंतर की प्रार्थना।

– स. गुरुबख्श सिंह, लुधियाना

मिला सच्चा राहबर...

सौरभ - ४२

मैं सत्संग में पहली बार १३ मार्च १९८३ में आई थी। और... प.पू. गुरुजी के प्राकट्य दिन पर ही भाग्य से मुझे गुरुहरि काकाजी महाराज के हाथों से पहली बार कंठी पहनने को मिली थी वह दिन मुझे आज भी याद है। परिवार के सब लोग पहले ही कंठी ले चुके थे, बस मैंने ही कंठी नहीं पहनी थी। उस समय ऐसा कुछ ख्याल नहीं था कि भगवान भजने हैं।

एक बार मैं अपने जन्मदिन पर मंदिर दर्शन करने के लिए आई, तो प.पू. गुरुजी ने सेवक से मुझसे पुछवाया कि मुझे कुछ कहना है। मैंने कहलवाया– *मुझे शादी नहीं करनी, भगवान भजने हैं और दीदी के साथ रहना है।* प.पू. गुरुजी ने कहलवाया– *भजन करना और हरिरामजी (पूर्वाश्रम के पिताश्री) जैसा कहें वैसा ही करना। जैसी श्रीजी महाराज की इच्छा होगी, वैसा ही होगा।* सिर्फ मेरा तो एक बार 'हाँ' ही कहना था, बाकी तो प.पू. गुरुजी ने ही सब संभाला। क्योंकि, जैसा कि प.पू. गुरुजी कहते हैं कि यहाँ जो लोग भी इकट्‌ठे हुए हैं, या मैं अपनी ही बात करूँ तो इस भावना से नहीं आए कि प्रभु पा लेने हैं। बस, प.पू. गुरुजी और प.पू. दीदी अच्छे लगे इसलिए यहाँ आई। भगवान भजना क्या होता है, यह तो पता ही नहीं था। गुरुहरि काकाजी महाराज धुन के महाराजा ! उसी रीति-नीति को अपनाते हुए हमेशा प.पू. गुरुजी ने भजन का ही सहारा लेने का आग्रह रखा।

घर में कोई भी इस फेवर में नहीं था कि मैं इस रास्ते पर चलूँ। जब भी मैं प.पू. गुरुजी से भगवान भजने की बात कहलवाती, तो प.पू. गुरुजी एक ही बात दोहराते कि **'तीव्र भजन'** करना और काकाजी से प्रार्थना करना कि हे! काकाजी जो मेरे हित में हो वही करना। साथ में यही कहलवाते कि घर में झगड़ा करके नहीं आना। यदि मंदिर आने के लिए मना करें, तो घर पर ही रह कर भजन करना। दरअसल जैसे हर एक माँ-बाप को समाज का एक डर होता है– लोग क्या कहेंगे ? हमें तो समाज में रहना है वगैरह-वगैरह। मैं कई बार ढीली भी पड़ जाती थी।

१९९७ में प.पू. गुरुजी की हीरक जंयती के उत्सव की सेवा के लिए मैं अक्षरज्योति रहने के लिए आई। तब एक दिन मेरे मन में सहज ही विचार आ रहा था, 'काश, मैं यहाँ हमेशा के लिए आ गई होती, तो ?' दूसरे दिन सुबह पूजा में प.पू. गुरुजी के दर्शन करने के लिए गई तो प.पू. गुरुजी ने सेवक द्वारा एक कागज भिजवाया जिसमें लिखा था–

हीरक जयंती की सेवा बहनों को सहायरुप होकर करना। जिससे कि बहनें दिल से प्रार्थना करें कि हे महाराज साध्वी (इस लड़की) को जल्दी से जल्दी 'अक्षरज्योति' बुला लो। बहनों के साथ रात में जग-जग कर सेवा लूट लेना।

मानो, इस सेवा के फलस्वरूप ही मुझे जल्दी ही 'अक्षरज्योति' में हमेशा के लिए रहने आने का सौभाग्य मिला। दूसरी ओर–प.पू. गुरुजी और प.पू. दीदी ने मेरे लिए खूब परिश्रम करके-भजन करके और मुझे सुबह ४ से ५ बजे तक फिक्स्ड टाईम कॉल का भजन करवा कर भी मेरा रास्ता सुलभ कर दिया। प.पू. गुरुजी

अकसर कहते हैं कि **भजन हर समस्या का 'रामबाण' इलाज यानि–ब्रह्मास्त्र है,** उन्होंने इस बात का अनुभव करवा दिया।

मेरी बड़ी बहन कविता के समझाने पर आख़िर गुरुपूर्णिमा के दिन मुझे प.पू. दीदी के पास भेजने के लिए घरवाले राजी हो गए। परंतु, महाराज ने भी टेस्टिंग की। जिस दिन मुझे आना था, उससे दो दिन पहले ही मेरे बड़े भाई को जबरदस्त चोट लगी, उसे अस्पताल में दाखिल करना पड़ा। मुझे तो ऐसा लगा कि अब गुरुपूर्णिमा पर मैं मंदिर नहीं जा सकूँगी। सो, मैंने प.पू. दीदी को फोन किया। प.पू. दीदी ने यही जवाब दिया कि *ऐसे समय में महाराज कसौटी करते हैं कि हम जगत के हैं या भगवान के!* महाराज ने करिश्मा किया और जब मैंने अपनी दोनों बहनों को साथ लेकर पापा से बात की, तो वे बोले–

घर की झंझट तो चलती रहेगी, इसे मंदिर भेज दो।

हम सोचते हैं कि हम भगवान भजने के लिए कितना साधन कर रहे हैं, पर वास्तव में तो सत्पुरुष हमारे लिए खूब छुपा भजन व परिश्रम करते रहते हैं। अब मैं कभी सोचती हूँ तो आश्चर्य होता है कि जो हरिरामजी (पूर्वाश्रम के पिता) कभी भी इसके लिए राजी नहीं थे कि मैं भगवान भजूँ, वे कैसे...?

जब मैं अक्षरज्योति में रहने के लिए आई तो **प.पू. दीदी** ने मुझसे कहा–

यहाँ आने के बाद मन, स्वभाव, प्रकृति का चक्कर तो चलता ही रहेगा। पर उसे कभी मन पर नहीं लेना और यही कोशिश करना कि भजन से उसे निकाल सको। ***मन पर किसी भी चीज का बोझ नहीं रखना।*** *सिर्फ* ***अहोहोभाव से भजन, सेवा और पीछे हठ कर लेना। सोचने से सिर्फ बीमारी मिलती है और कुछ नहीं मिलता।***

सच, हम कई बार वृत्तियों के वेग में बह कर कई गल्तियाँ कर जाते हैं और जब कभी भी कहीं चूक जाते हैं, तो प.पू. गुरुजी अंतर्यामी रूप से समाधान कर ही देते हैं और साथ-साथ उसे टालने के लिए भजन करने की आज्ञा भी दे देते हैं। **वास्तव में तो साधु हमारी गल्तियों की ओर देखता ही नहीं, बल्कि प्रभु का संबंध देख कर चेतना का विकास ही करता रहता है।** जीव को कैसी गरज होनी चाहिए, उसका एक बहुत अच्छा उदाहरण देकर प.पू. गुरुजी ने समझाया–

एक मज़दूर सुबह पाँच-छः बजे उठ कर मज़दूरी करने के लिए जाता है, क्योंकि उसे गरज है कि उसका गुज़ारा उसी से होने वाला है। ऐसे ही गरज साधक को भी होनी चाहिए और उसे भी सुबह जल्दी उठ कर ठाकुरजी के दर्शन के लिए पहुँच जाना चाहिए। फिर अपना उदाहरण देते हुए बोले–

मुझे गरज थी तो योगीबापा की पूजा में जाने के लिए सुबह चार बजे उठ कर नहा-धोकर पैदल पहुँच जाता था। उस समय न कोई बस होती, न स्कूटर।

यूँ अपने उदाहरण देकर प.पू. गुरुजी हमें सिखाना चाहते हैं कि हम अपना समय न बिगाड़ें। सच, प.पू. गुरुजी साधना में आड़े आती बारीक-बारीक ग्रंथियों को टालने के लिए ऐसी-ऐसी चाबियाँ बताते हैं कि भले ही उन पर हम तुरंत आचरण न भी कर पाएँ, लेकिन उनके बारे में विचार करने पर अपने भीतर छिपी हुई उन छोटी-छोटी चोरियों का ख्याल तो पड़ता ही है, जो हम सत्पुरुष के साथ करते रहते हैं। प.पू. गुरुजी कहा करते हैं कि भले

ही प.पू. काकाजी की बातें मेरी समझ में नहीं बैठती थीं, लेकिन यह विश्वास था कि वे जो कह रहे हैं, वही सही सिद्ध होने वाला है और वह मेरे हित में ही है। यूँ आज हम भी काकाजी-गुरुजी के कहलाए जाते हैं, तो उनकी हर बात हम भी अंतर से सही और हितकारी मानें व हमारा उनसे संबंध बढ़ता रहे-ऐसी प्रार्थना!

प.पू. गुरुजी की हर एक क्रिया कुछ न कुछ सीख देती है। प्रत्येक वर्ष चातुर्मास में प.पू. गुरुजी हर दो घंटे पर दो मिनिट की धुन करने का नियम देते हैं। कई बार हम मंदिर में बैठे होते हैं, तो हमेशा देखा है कि यदि प.पू. गुरुजी नाश्ता कर रहे हों या भोजन कर रहे हों और उसी समय धुन करने के लिए घंटी बजे, तो प.पू. गुरुजी तुरंत नाश्ता या भोजन छोड़ कर दो मिनिट की धुन अवश्य करते हैं। देखा जाए तो यदि प.पू. गुरुजी उस समय धुन न करें तो भी कोई हरज नहीं है। लेकिन हमें सिखाने के लिए वे नियम पालते हैं। इसी प्रकार कुछ भी शुरू करने से पहले या मंदिर से बाहर जाते हुए भी दो मिनिट ठाकुरजी के दर्शन करके-धुन करके ही बाहर निकलते हैं। इसके द्वारा वे हमारे समक्ष आदर्श प्रस्तुत करते हैं।

इसके अलावा मंदिर में आने वाला हर एक व्यक्ति, चाहे किसी कार्य के कारण आए, उसके जीवन में प्रभु बस जाने चाहिए–यही हमेशा उनकी भावना रही है। उदाहरण के लिए अब मंदिर का फिनीशींग कार्य शुरू हुआ है। सो, पत्थर पर कारीगरी करने के लिए करीब १५० शिल्पी मंदिर में रहते हैं। उनमें से कई शिल्पी 'बॅप्स' से जुड़े हुए हैं। सो, प.पू. गुरुजी ने एक दिन उनसे कहा कि आप लोग रोज धुन करने के लिए सुबह आया करो और सारा दिन काम भी 'स्वामिनारायण' मंत्र का जाप करते हुए करो। तब से कई शिल्पी हर रोज धुन और आरती करने के लिए प.पू. गुरुजी के पास हॉल में आते हैं और प्रसाद लेकर काम करने में लग जाते हैं। जब उन शिल्पियों से प.पू. गुरुजी ऐसी उम्मीद रखते हैं, तो हम से भजन करवाने की उन्हें कितनी अपेक्षा होगी! दरअसल **प.पू. गुरुजी ने हमेशा भजन का ही सहारा लेने के लिए कहा है।** चाहे कोई-कैसी भी समस्या लेकर आए, उसे 'भजन' का ही उपाय बताते हैं।

जब हमने भागवती दीक्षा ली, उसी दिन शाम को प.पू. गुरुजी ने सभा में कहा था : *हर एक के पास यस, आई एग्री यानि–'सुरुचि'। अक्षरज्योति में हमेशा छोटा बन कर रहना।* फिर थोड़े दिनों के बाद प.पू. गुरुजी किसी भक्त के घर जयपुर गए थे, वहाँ सुबह पूजा करते हुए प.पू. गुरुजी ने बात की–

मैं हर रोज पूजा में प.पू. काकाजी को धन्यवाद देता हूँ और कहता हूँ कि आपकी कृपा से आज भी मैं इन कपड़ों में हूँ।

देखा जाए तो प.पू. गुरुजी और प.पू. दीदी–दोनों ही अपना स्वरूप इतना छुपा कर जीवन जीते हैं कि हमें कभी एहसास ही नहीं होने देते कि वे बहुत ऊँची कक्षा पर हैं। इसलिए हमें भी अपने साथ ही अपने जैसा ही रखते हैं। फिर भी, आपकी मर्जी के मुताबिक तो अभी तक मैं जीवन नहीं जी पाई हूँ। सो, हर रोज प.पू. काकाजी, प.पू. गुरुजी और गुणातीत स्वरूपों के चरणों में यही प्रार्थना करती हूँ कि ये भगवा कपड़े आपने ही दिए हैं। आपकी मर्जी से जीवन जीते हुए जीवन की आख़िरी साँस इन्हीं कपड़ों में निकले...

– साध्वी सुरुचि, अक्षरज्योति

सौरभ - ४३ मायिक की दृष्टि से अमायिक का वर्णन

मैं सत्संग में करीब ३-४ साल की उम्र से जुड़ी। ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी के दर्शन मैंने कई बार किए हैं, पर उनमें से कुछ स्मृतियाँ तो अभी भी इन पलकों को बंद करके महसूस करती हूँ। ए-१०३ के मंदिर में प.पू. गुरुजी के सोफे के पास एक पलंग लगा होता था, जिस पर प.पू. काकाजी पीछे रखी गद्दी का टेका लेकर, पांव लम्बे करके, विराजमान होते। साथ ही रखे टेबल पर नीले रंग का, कटवर्क का कांच का ग्लास एवं पीकदान रखा होता। उस ग्लास से पानी पीकर वे पीकदान में कुल्ला किया करते इत्यादि...

एक बार मेरे पेट में बहुत तेज दर्द हुआ। उस समय मेरे पापा मुझे कई डॉक्टर्स के पास लेकर गए, पर कहीं भी आराम नहीं आया। पापा मुझे मंदिर लेकर आए। प.पू. काकाजी उन दिनों दिल्ली मंदिर में उसी पलंग पर विराजमान थे। पापा ने प.पू. काकाजी से कहा कि इसका पेट का दर्द ठीक नहीं हो रहा। कई डॉक्टर को दिखाया है। प.पू. काकाजी ने मुझे अपनी गोद में लिटा कर धुन की। फिर थोड़ी देर बार धुन बंद करके मुझे काजू का प्रसाद खिलाया और कमर पर एक धब्बा मारा। मुझे अच्छी तरह याद है कि मेरा पेट का दर्द जो इतने डॉक्टरों की दवा खाने के बाद भी ठीक नहीं हो रहा था, तुरंत गायब हो गया।

सच, प.पू. काकाजी ने हमें प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी जैसे समर्थ, कृपालु, दयालु, करुणासिंधु और करोड़ों माँ के प्यार को फीका कर दें–ऐसे सत्पुरुषों की गोद में बिठा दिया। लेकिन हम, अपनी होशियारी के कारण उस गोद में बालक की भांति पड़े न रहकर, अपने साथी-मुक्तों को, यहाँ तक अपने स्वरूप को भी दर्द देते रहते हैं।

प.पू. गुरुजी के साथ के अनुभव लिखने की बात आती है तो भजन की वे पंक्तियाँ दिमाग़ पर छा जाती हैं–'**अनुभव के खजाने दिए, स्मृतियों की दी दौलत। सुख धाम का यहीं पाया, तुम्हारी ही बदौलत।**'

प.पू. गुरुजी ने एक बार बताया था कि भजन करते समय सभी स्वरूपों की स्मृति करनी चाहिए, क्योंकि इससे उस समय सभी स्वरूपों की एक-एक विशेषता जरूर याद आती है और प्रार्थना निकलती है कि–

ब्रह्मस्वरूप प.पू. योगीजी महाराज–हे बापा! आप हमें अपने जैसी **सेवा व दासत्व भक्ति** प्रदान करना। आपकी तरह हम भी मुक्तों का माहात्म्य समझ पाएँ।

ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज– हे काकाजी! आप **निर्दोष बुद्धि के राजा** हो। आप हमें अपने जैसी निर्दोषबुद्धि प्रदान करना जिससे कि सभी को दिव्य व निर्दोष मान सकें। आप अपने जैसी **शूरवीरता** मुझे देना जिससे मैं इन्द्रियों और अन्तःकरण से शूरवीरता से लड़ कर आपकी '**वीरांगना**' बन कर फतह प्राप्त कर सकूँ।

ब्रह्मस्वरूप प.पू. पप्पाजी– हे पप्पा! आपके जैसी **सरलता व सादगी** मुझे देना, जिससे **साथी मुक्तों के पास सरल बन कर प्रभु को वश कर सकूं।**

प.पू. गुरुजी– हे गुरुजी! आप अपने जैसा हृदय हमें देना **जिसमें सभी के लिए, उसकी अपनी एक**

जगह व स्थान हो। चाहे वो आपकी मर्जी में वर्ते या न वर्ते; इसमें कोई भी अपना या पराया नहीं। सभी समान, सभी अपने।

मेरे साथ, मेरे अनुभव यात्रा पर चलने से पहले मैं आपसे भजन की निम्न पंक्ति द्वारा प.पू. गुरुजी के लिए कुछ कहना चाहती हूँ–

'तारी महिमा गवानों मने चाव छे रे। कहो कागना कैवा मोटा भाग छे रे।'

चलिए, अब यात्रा शुरू करते हैं।

प.पू. गुरुजी कभी-कभी मज़ाक में कहते हैं कि मुझसे वैसे कोई कुछ भी मांगे, तो मैं उसे आराम से दे सकता हूँ; पर 'पौंक' (ज्वार के दाने) मैं किसी को भी नहीं देता। लेकिन ऐसा नहीं है। दरअसल **उनके जीवन में प.पू. काकाजी और भक्तों के अलावा कुछ भी कभी न प्रिय हुआ है और न ही कभी होगा, ना ही कभी रखेंगे।** इस बात का एहसास सभी के दिल में सहज ही रहता है। भले हम ख़ुद प्रभु के अलावा अपनी वृत्तियों, स्वभाव या जड़ता को ही प्रिय रखते होंगे। हर एक के बारे में उन्हें इस बात का ख्याल है, फिर भी उन्हें तनिक भी इस बात का भार नहीं रहता और न ही इस कारण वे उस मुक्त के लिए परिश्रम करना छोड़ते हैं।

दिसंबर २००७ को दिल्ली से करीब २००-३०० हरिभक्त छपिया तीर्थ शिविर के लिए जाने वाले थे। सो, वहां व्यवस्था करने के लिए हमारी एड्वान्स टीम दो दिन पहले पहुँच गई थी। दो दिन बाद प.पू. गुरुजी मुक्तों के साथ छपिया पहुंचे। हम सब वहीं थोड़ी दूर खड़े थे। प.पू. गुरुजी ने गाड़ी से उतरते ही सेवक द्वारा मुझे पौंक भिजवाते हुए कहलवाया– *ये मैं नित्या के लिये लाया हूँ और मैं भी खाऊंगा।* मुझे मन में विचार आया कि मुझे याद करके वे दिल्ली से पौंक लेकर आए हैं। उन्हें मेरा कितना ख्याल है, पर क्या मैं सिर्फ उनके ही मनन-चिंतन में रहती हूँ? शायद सत्पुरुष की स्मृतियाँ मुझ पर हावी न रह कर, स्वभाव ही हावी हो जाते हैं। उनके मुताबिक मैं तो जीती नहीं, फिर मुझ पर ऐसा अनुग्रह? पर, जैसा कि मैंने पहले कहा उन्हें किसी के लिए भी कोई फर्क नहीं। वे सभी को एक-सा ही प्यार देते हैं। यह बात भी मैं जब सात्त्विकभाव में होती हूँ तभी याद आती है, वर्ना जब मन के हाथों में अपनी लगाम छोड़ देती हूँ, तो उसके घोड़े जिस बहाव में ले जाते हैं, उसी बहाव में बह कर यह सोचने लगती हूँ कि साधु को इसके साथ अधिक लगाव है, मेरे साथ उतना नहीं? वे पहले उसके होंगे मेरे नहीं। पर, **प.पू. गुरुजी ने तो कभी अपना पर्सनल कुछ भी नहीं रखा है,** बाकी सब तो बहुत दूर की बात है। अरे! उनका कोई सेवक भी पर्सनल नहीं है। अकसर देखा जाता है कि किसी काम के लिए किसी बड़े व्यक्ति-विभूति से मिलना हो, तो उनके सॅक्रेटरी या सेवक द्वारा ही मिल पाते हैं। पर यहां ऐसा कुछ भी नहीं है। पू. अभिषेक भले गुरुजी ही की निजी सेवा में रहता है, पर गुरुजी के लिए सभी उनके पर्सनल हैं। अर्थात् **हरिभक्तों को प.पू. गुरुजी से बात करने के लिए किसी माध्यम की जरूरत नहीं।** प.पू. गुरुजी की यह विशेषता तो नए-पुराने सभी को खूब स्पर्श करती है।

प.पू. गुरुजी के अंतर्यामी स्वरूप की बात करूँ तो... प.पू. गुरुजी के हाथ में भगवे रंग के मोटे दानों की छोटी माला जिसे देख कर मुझे अकसर विचार आता– काश! प.पू. गुरुजी की प्रसादी की यह माला मुझे मिल

जाए! उसके पीछे एक कारण था कि एक बार वह माला प.पू. गुरुजी के हाथ में किसी मुक्त ने देखी, तो उसने सहज ही कहा–क्या यह बहुत मोटी नहीं है? तो प.पू. गुरुजी बोले–मुझे मोटी चीजें पसंद हैं। मेरे मन में विचार आया कि मैं भी तो मोटी हूँ।

२९ मई २००९ सुबह ७.३० बजे मैं मुंबई की सौ. डॉली दीदी के साथ मंदिर में बैठी थी। मेरी माला दोबारा बनने के लिए गई थी, मैंने सौ. डॉली दीदी से उनकी माला फेरने के लिए मांगी। थोड़ी देर बाद मज़ाक करते हुए वे मुझ से अपनी माला वापिस मांगने लगीं। हमारी आपस की बातचीत का शोर सुन कर, सोफे पर आँखें बंद करके बैठे हुए, प.पू. गुरुजी जग गए और सेवक से पुछवाया–क्या हुआ? मैंने कहलवाया कि डॉली दीदी मुझसे अपनी माला वापिस मांग रही हैं। उत्तर में प.पू. गुरुजी ने पुछवाया–तुम्हारे पास माला नहीं है? मैंने कहलवाया–है तो पर वो ठीक होने गई है। प.पू. गुरुजी पुनः आँख बंद करके बैठ गए और थोड़ी देर बाद आँखें खोल कर वही भगवा मोटी माला अपने हाथ से उतार कर मुझे भिजवाई और कहलवाया–ले तेरी माला। मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि क्या यह सच है। पर, अंर्तयामी से अंतर की कोई बात क्या छुपी रह सकती है? आज वह माला मेरे पास है।

इसी प्रकार १३ मार्च २०१० को प.पू. गुरुजी के ७३वें जन्मदिन के बाद प.पू. गुरुजी अमदावाद जा रहे थे। मुझे सहज ही संकल्प हुआ कि काश! मुझे भी इस ट्रिप में जाने का मौका मिल जाता। और... वही हुआ। अंतर्यामी रूप से प.पू. गुरुजी ने मुझे अमदावाद चलने के लिए कहलवाया और मुझे जीवन में अद्‌भुत स्मृति मिल गई।

सब जानते ही नहीं, बल्कि दिल से मानते हैं कि 'caring thy name is P.P. Guruji'। इसका एक छोटा-सा प्रसंग–

थोड़े समय पहले ही पू. योगिनी बहन के हार्ट ऑपरेशन होने के कारण, उनके दर्शन हेतु प.पू. दीदी मुंबई जाने वाली थीं। प.पू. दीदी एवं पू. दृष्टि दीदी तो फ्लाईट से जाने वाले थे। पर, मैं और पू. बंसरी दीदी एक दिन पहले राजधानी ट्रेन से रवाना हुए। ट्रेन मथुरा से आगे पहुंची होगी कि दिल्ली से फोन आया कि पू. योगिनी बहन का ऑपरेशन पोस्टपोन हो गया है और प.पू. दीदी की एयर टिकिट्स कॅन्सल करा दी हैं। हम लोग तो सफ़र में थे, परंतु इधर दिल्ली में प.पू. गुरुजी तो ट्रेन का टाइम टेबल लेकर देखने लगे कि रास्ते में ऐसा कौन-सा स्टेशन आयेगा कि जहाँ उन्हें उतार कर वापिस बुलाया जा सके। थोड़ी देर बाद सेवक का फोन आया– 'गुरुजी कहलवा रहे हैं कि सुबह तीन बजे जब वडोदरा स्टेशन आएगा, तो दोनों वहां अपना सारा सामान लेकर उतर जाना। अमदावाद से पू. परिमलभाई लेने के लिए आएँगे। सो, एलार्म लगा कर सोना और... उस दिन शाम की राजधानी से अमदावाद से दिल्ली लौट आना। इंटरनॅट से टिकिट करवा दी हैं।' यूँ सभी इन्सट्रक्शन्स हमें दीं। हम एर्लाम लगा कर सोए और सुबह पौने ३ बजे उठ भी गए। **हैरानी की बात थी कि सुबह ३ बजे सामान लेकर जब हम गेट पर खड़े थे, तभी मंदिर से पू. अभिषेक का फोन आया कि प.पू. गुरुजी पुछवा रहे हैं कि आप लोग उठ गए या नहीं। यह सुन कर हृदय गद्‌गद् हो गया।** प.पू. गुरुजी चाहते तो खुद न जाग कर केवल सेवक को कह भी सकते थे कि सुबह फोन करके उन्हें उठा देना। पर, **उन्हें छोटे से छोटे**

सेवक-मुक्त की भी कितनी चिंता रहती है! ऐसी चिंता तो शायद माँ-बाप भी अपने बच्चों की न कर पाते होंगे। जिनकी स्मृतियां में, जिनके चिंतन में हमें निरन्तर रहना चाहिए, वे प्रभु स्वयं अपने भक्तों के चिंतन में रहते हैं। इससे भी अधिक, अक्षरज्योति की अन्य बहनों से पुछवा कर कि उन दोनों को खाने में क्या पसंद है, वही भोजन अमदावाद की सभी भाभियों को बनाने के लिए कहलवाया। सच, भक्तों की कैसी महिमा!

एक भजन में पंक्ति है–'मेरी रुचि वैसी सेवा दे, निमित्त कुछ ऐसा बना करके...' घरेलू काम करने का मुझे शौक नहीं है। मुझे शॉपींग इत्यादि जैसे कामों में ज्यादा रुचि है और वो मैं आसानी से कर भी लेती हूँ। सो, मुझे वैसी ही सेवा करने का सौभाग्य मिला। अकसर प.पू. गुरुजी भक्तों के लिए कुछ भी मंगाते, तो हमेशा यही कहते हैं कि अच्छे से अच्छा लेकर आना, ऐसा नहीं कि सस्ता-सा उठा लाओ। मतलब भक्तों के लिए कोई रिज़र्वेशन नहीं, अच्छी से अच्छी चीज उनकी कम्फर्ट के मुताबिक मंगवा कर देते हैं। ऐसे ही एक बार प.पू. गुरुजी ने अपने लिये पैंसिल मंगवाई। मैं तीन-चार पैंसिल लेकर आई कि प.पू. गुरुजी को जो भी पैंसिल पंसद आएगी उसे रख कर बाकी की लौटा दूंगी। सभी पैंसिल्स में से एक पैंसिल उन्हें लिखने में कम्फर्टेबल लगी। उन्होंने उसका रेट पुछवाया। मैंने कहलवाया कि १०० रुपये की है। फिर अन्यों के भी रेट पूछे और उनमें से जो सबसे सस्ती थी वह रखी। मैंने कहलवाया कि आपको जो कम्फर्टेबल है, वही रख लीजिए। बड़ी सहजता से उन्होंने कहलवाया कि इतनी मंहगी क्या करनी, काम तो इससे भी चल जाएगा। सुन कर मैंने मन में सोचा कि कहाँ तो भक्तों की कम्फर्ट-उनकी पसंद के लिए हज़ारों रुपये के बारे में भी प.पू. गुरुजी नहीं सोचते और अपने लिये ५० रुपए का भी हिसाब रख रहे हैं।

सच, अनुभवों के तो खज़ाने हैं। बस, अब उन खज़ानों को संजो कर रखना है। अपनी वृत्तियों-अपने स्वभावों-के जंजाल में उन्हें खत्म करके हम कंगाल न हों। अखंड उनकी स्मृति-महिमा में ही अपने आपको डुबाये रखें। प.पू. पप्पाजी के एक प्रवचन में सुना था कि कथनी-करनी में हम फर्क न होने दें। इस तरह **मेरा वर्तन ही मेरे गुरु का दर्पण बन सके, जिसमें सिर्फ उनका ही परिश्रम दिखाई दे।**

प.पू. गुरुजी कहते हैं न कि अर्जुन कैसा ही था, पर उसे कृष्ण का भरोसा था तो उसके कुरुक्षेत्र का अंत आया और कृष्ण के साथ खुला संबंध रख कर वह नर से 'नारायण' बना। बस, उसी तरह हम भी सत्पुरुष से खुला संबंध रख कर उनसे जुड़ जाएँ, जिससे हमारे अंतर के करुक्षेत्र का भी अंत आए। बस इसी प्रार्थना के साथ–

संतों, भाइयों, गृहस्थों और बहनें
करें हासिल सभी हम साधुता के गहनें
सिर्फ बातों से नहीं, अब वर्तन से झलके
चारों तरफ हमारे गुरु का ही नज़ारा
ऐसे मनाएँ हम दो हज़ार बारह...

– नित्या, अक्षरज्योति

सौरभ - ४४

स्वामिश्रीजी

सबसे पहले तो प्रभु का कोटि-कोटि धन्यवाद कि हमें प.पू. गुरुजी का योग मिला। कभी सोचा भी नहीं था कि हम इतने भाग्यशाली होंगे। सच, भगवान की बहुत ही कृपा है।

जब भी नई पत्रिका मिलती है तो सबसे पहले 'सौरभ' पढ़ने का मन होता है यह जानने के लिए कि इस बार किसने-क्या लिखा है। सबके अनुभव पढ़कर बहुत अच्छा लगता है और पता चलता है कि प.पू. गुरुजी ने सभी के लिए कितना परिश्रम किया है। आज वे इतने ऊंचे लेवल पर हैं, फिर भी खुद को छुपा कर रखते हैं। हमेशा काकाजी, पप्पाजी और स्वामिजी को ही आगे रखकर चलते हैं; अपना नाम कहीं भी आने नहीं देते।

ऐसी इच्छा रहती थी कि कोई ऐसे गुरु मिलें, जिनके साथ एक नज़दीकी संबंध-संपर्क हो। **कई जगह सत्संग में जाते थे, पर मन को शांति नहीं मिलती थी। प.पू. गुरुजी से मिलने के बाद मन को जो शांति और अपनापन मिला, उसे बयान नहीं कर सकती।** जैसे कोई पिता या माँ बच्चों का ध्यान रखती है, उससे भी अधिक ध्यान प.पू. गुरुजी अपने सभी हरिभक्तों का रखते हैं। ऐसा नहीं कि सिर्फ किसी एक का, बल्कि सभी हरिभक्तों का। कभी-कभी तो यह सोच कर हैरानी भी होती है कि प.पू. गुरुजी सबके बारे में कैसे याद रखते हैं।

ऑफिस या घर से मंदिर आते हुए रास्ते में कभी कुछ खाने की चीज देख कर मन में इच्छा होती, तो मंदिर पहुंच कर वही चीज सामने से मिल जाती। हैरानी होती थी यह सोच कर कि गुरुजी को कैसे पता चल जाता है कि हमें यह खाने की इच्छा हो रही थी। प.पू. गुरुजी ने मंदिर में छोटे-बड़े सबको तरह-तरह के व्यंजनों का प्रसाद खिला कर इतना तृप्त कर दिया है कि अब रेस्तरां इत्यादि में जाकर कुछ खाने की इच्छा ही नहीं होती।

मंदिर के संपर्क में आने के शुरुआती दिनों में मैं जब प.पू. गुरुजी की सेवा में लगे युवा लड़कों को देखती थी, तो सोचती कि मेरा बेटा **'पुनीत'** भी यदि ऐसे ही प.पू. गुरुजी की सेवा में जुट जाए तो कितना अच्छा हो। महाराज की कृपा से आज वह गुरुजी की सेवा में लगा हुआ है और **जब वह उनके कहे अनुसार सेवा करता है,** तो मुझे केवल अच्छा ही नहीं लगता, बल्कि एक प्रकार की निश्चिंतता है। बस **यही प्रार्थना** करती हूँ **कि वह हमेशा ऐसे ही तन, मन और धन से प.पू. गुरुजी की सेवा में लगा रहे।**

प.पू. गुरुजी की काकाजी के प्रति कितनी भक्ति होगी कि मुंबई जैसे शहर में जन्म लिया, उच्च कक्षा की शिक्षा प्राप्त की; लेकिन फिर भी, दिल्ली की असहनीय सर्दी व गर्मी को गिने बिना, प.पू. काकाजी के वचन से दिल्ली में रह रहे हैं। कैसी होगी प.पू. गुरुजी की प.पू. काकाजी के प्रति श्रद्धा, विश्वास और निष्ठा और भक्ति?

उनकी लाइफ स्टाइल देखकर खूब ही हैरानी होती है। अलग कमरा होते हुए भी वे जनरल हॉल में सबके साथ सोते हैं। सच में इतनी ऊंची स्टेज पर होने के बाद भी वे कितने सरल तरीके से रहते हैं। ये बातें छोटे और बड़े सभी को टच कर जाती हैं। यही कारण है कि समर वेकेशन में बच्चे अपने रिश्तेदारों के घर न जाकर, मंदिर में आकर रहना पसंद करते हैं और बड़े ही डिसीप्लीन में रहते हैं। सभी माँ-बाप को निश्चिंतता रहती है

कि उनके बच्चे सेफ हैं; वर्ना, आज के समय में जगत में तो बच्चों की वजह से माँ-बाप इस बात से ही परेशान रहते हैं कि बच्चे उनका कहना नहीं मानते।

प.पू. गुरुजी हर समय प्रभुमय ही रहते हैं। वे कोई भी क्रिया करें–छोटी या बड़ी–सबसे पहले धुन अवश्य करते हैं। किसी का फोन आए या टी.वी. चलाने से पहले १ मिनट के लिए आंखें बंद करके भगवान को याद करते हैं। कभी-कभी तो **यह सोच कर ग्लानि भी होती है कि रोज उनको ऐसा करते देखकर भी हम ये सब चीजें अपने वर्तन में क्यों नहीं ला पाते।**

सन् २००३ में मेरे पति (पू. जयप्रकाशजी) को ऑफिस की तरफ से ३ साल के लिये जर्मनी जाने का आदेश हुआ। एक तरफ तो जाने की ख़ुशी थी, पर साथ में दुःख भी था कि इतने समय हमारा सत्संग भी छूटेगा। उसके बाद पता चला कि १८ साल से बड़े बच्चों को ३ महीने से अधिक का वीज़ा नहीं मिलेगा। सो चिंता हो रही थी कि बच्चों का क्या करेंगे। दोनों बच्चों की पढ़ाई चल रही थी। फिर यही सोचा कि पू. जयप्रकाशजी अकेले ही चले जाएँगे। प.पू. गुरुजी से इस बारे में बात की, तो उन्होंने तुरंत कहा–

'इसमें सोचने वाली क्या बात है? बच्चे मंदिर व अक्षरज्योति में रह लेंगे और आप दोनों जाओ।'

आज भी यह सोच कर मन में विचार आता है कि प.पू. गुरुजी ने कितनी बड़ी जिम्मेदारी अपने ऊपर ली और हमसे कहा कि आप निश्चिंत होकर जाओ। ६ दिसंबर की रात को ३.३० बजे हमें निकलना था। इतनी ठंड में प.पू. गुरुजी, प.पू. दीदी एवं सभी भगवाधारी बहनें लगभग ८० हरिभक्तों के साथ हमें छोड़ने के लिए एयरपोर्ट आए। वह दिन तो भूलता नहीं और याद करके आंखें नम हो जाती हैं। प.पू. काकाजी की कृपा एवं प.पू. गुरुजी के अथक् परिश्रम से ही ऐसा समाज निर्मित हो पाया है!

तत्पश्चात्, २००४ में ३ महीने के लिए बच्चे जर्मनी आए। अक्टूबर में मैं भी उनके साथ वापिस आई और प.पू. गुरुजी ने कृपा करके मेरी बेटी कपिला 'धुन' की शादी प.भ. नवीनभाई के बेटे 'आशीष' से करवा कर अनुगृहीत किया। सच में प.पू. गुरुजी को कोटि-कोटि धन्यवाद कि दृढ़ निष्ठा वाला ऐसा सत्संगी परिवार हमें दिया।

२००६ में मुझे अकेले ही जर्मनी जाना था। बुकिंग ९ अप्रैल की थी और मेरा जन्मदिन १० अप्रैल को था। इस बीच में ८ अप्रैल को प.पू. गुरुजी का मुक्तेश्वर जाने का प्रोग्राम बन गया। मुझे यह अच्छा नहीं लगा और मैंने प.पू. गुरुजी से कहलवाया कि आप एक दिन बाद चले जाएँ तो कैसा रहेगा! प.पू. गुरुजी ने मुझसे पुछवाया– क्या आपकी जाने की तारीख पोस्टपोन हो सकती है? मैंने टिकिट प.पू. गुरुजी को भिजवा दी। वे मेरी टिकिट कैंसिल करवा कर मुझे सभी हरिभक्तों के साथ मुक्तेश्वर ले गए। सुबह से ही मेरे जन्मदिन की मुबारकबाद देते हुए हरिभक्तों के फोन आने लगे। केक बनवा कर हरिभक्तों ने मेरा बर्थ-डे मनाया। वह दिन मैं कभी नहीं भुला सकती। बस यही मन से बस यही बार-बार निकलता है–'धन्यवाद, धन्यवाद'।

हमारे जर्मनी रहते हुए, पू. अनुज भैया वहाँ ऑफिस के काम से आए थे। हम लोग ब्रेकफास्ट कर रहे थे कि फोन पर मंदिर में किसी से उनकी बात हुई। उन्होंने वैसे ही पूछ लिया– क्या कर रहे हो? अनुज भैया ने बताया कि वे गोभी के परांठे खा रहे हैं। उन्होंने सहज ही कहा कि हमारे लिए भी ले आना। मैंने ८-१० परांठे

बनाकर पू. अनज भैया को दिए। दिल्ली में प.पू. गुरुजी को जब पता चला, तो उन्होंने वे परांठे मंगवा कर स्पेशली खाए। यह जान कर मुझे बड़ा दुःख हुआ कि प.पू. गुरुजी ने १०-१२ घंटे पहले के बने परांठे खाए, किन्तु दूसरी ओर एक दर्शन हुआ कि प.पू. गुरुजी को भक्तों की कैसी महिमा! '**जीवन में आप आए प्रभु का प्रकाश बन कर**' भजन की यह पंक्ति सहज ही बार-बार मन में आती रहती है।

मंदिर के नज़दीक रहने आने के लिए हम लोग काफी समय से मकान शिफ्ट करने की सोच रहे थे। जहाँ हम रहते थे, वहां की सड़कें टूटी हुई थीं और ट्रेफिक जाम की प्रॉब्लम निरंतर बढ़ती जा रही थी। पर समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें। प.पू. गुरुजी के कहने पर मंदिर के आस-पास के एरिया में काफी मकान देखे। उन्हीं की कृपा से बहुत रीज़नेबल प्राईस पर हमें एक मकान मिल गया और सभी हरिभक्तों की मदद से जल्दी ही पेमेन्ट भी हो गई। इसी दौरान जहाँ पहले रहते थे, उस मकान का भी सौदा हो गया और सारी डील आसानी से निपट गई। प.पू. गुरुजी को कोटि-कोटि धन्यवाद।

यादगार दिन – यूँ तो याद रखने के लिए बहुत दिन हैं। फिर भी कुछ दिन हम खास याद रखते हैं। ४ अप्रैल को हम नए मकान में शिफ्ट हो गए। अभी सामान भी पूरी तरह से सेट नहीं हुआ था, सो मन में दुविधा चल रही थी कि प.पू. गुरुजी को कैसे घर पर बुलाएँ? १० अप्रैल को मेरे बर्थ-डे निमित्त प.पू. गुरुजी ने अचानक ही हमारे घर आने का प्रोग्राम बना दिया। मैं बयान नहीं कर सकती कि मुझे कितनी खुशी हुई। मन से बार-बार गुरुजी के लिए धन्यवाद ही निकलता है।

सच में प.पू. गुरुजी के परिश्रम का क्या कहना! कैसा समाज तैयार किया है! **किसी भी हरिभक्त को कुछ भी दुःख या तकलीफ हो या हॉस्पीटल में एडमिट हो, तो बाकी सभी हरिभक्त उनकी सेवा के लिए तैयार रहते हैं।** ऐसा सिर्फ यहीं पर देखने को मिलता है! अन्य सत्संग में तो सत्संगी एक-दूसरे को जानते तक नहीं है।

आजकल २-३ महीने से मंदिर में निर्माण कार्य चल रहा है और सबको पता है कि कितना शोर होता है। थोड़ी देर के लिए भी जो जाता है तो वह यही कहता है कि यहाँ रुकना बड़ा मुश्किल है। पर सच गुरुजी की बड़ी हिम्मत और सहनशीलता है जो किसी से कुछ भी शिकायत किए बिना दिन-रात शोर में वहीं बैठे रहते हैं। यह सब तो किसके लिए? हम सभी हरिभक्तों के लिए ही न। प.पू. गुरुजी को कोटि-कोटि धन्यवाद। महाराज से यही प्रार्थना कि उनकी सेहत बहुत अच्छी रहे और वे दीर्घायु हों।

हमारे **मंदिर की एक और विशेषता है** और वह है **प.पू. आनंदी दीदी और बहनों का साथ** मिलना। दीदी के साथ हम खुलकर बात कर लेते हैं। बहनों के साथ रहने से बहुत कुछ सीखने को भी मिलता है।

कहने को तो बहुत कुछ है जिसका कोई अंत ही नहीं है। वैसे भी प.पू. गुरुजी की महिमा का तो हम पार ही नहीं पा सकते। बस हे गुरुजी! आपसे यही प्रार्थना कि आप अपनी कृपा बरसाते रहें और हमारी जो भी कसर हो, उसे टाल दें। प.पू. गुरुजी आपका बहुत-बहुत धन्यवाद! प.पू. काकाजी आपका बहुत-बहुत धन्यवाद जो हमें प.पू. गुरुजी के योग में रखा है।

– शशि मल्होत्रा, दिल्ली

✡✡✡

13 मार्च 2011 – प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव की प्रातः सभा

प.पू. निर्मलस्वामिजी (समिढयाळा)

...वर्षों पहले पप्पाजी समढियाळा आए हुए थे। पप्पाजी बैठे हुए थे और एक व्यक्ति ऐसा था जिसने पचासों दंडवत् पप्पाजी को किए। उसकी बाँह पकड़ कर मैंने खींच लिया और कहा कि बस अब बंद तो कर। पप्पाजी ने कहा कि ऐसा क्यों कर रहे हो? मैंने पप्पाजी से कहा कि यह पागल है। इस पर पप्पाजी बोले–पागल है, तो फिर दीवार को क्यों दंडवत् क्यों नहीं कर रहा; मुझे ही क्यों कर रहा है। संबंध देखने की यह बात है...

गुरुजी, कोठारीस्वामिजी और हम सब गोंडल खूब इकट्ठे रहे हैं। भगवा कपड़े वाले के लिए, भगवे कपड़े वाले के गुण गाना बहुत मुश्किल है। पर, गुणातीत समाज में यह बात नहीं है। गोंडल में पहली बार मैं गुरुजी से मिला; आज पचास साल हो गए। उस समय जो भाव, प्रेम और लगाव था, वैसा ही भाव और प्रेम आज भी गुरुजी के प्रति है...

कोठारीस्वामी, गुरुजी के पास से शालीनता की सुंगध आती है। शालीनता ऐसे ही नहीं मिलती। शालीनता आशीर्वाद से मिलती है। ...गुणातीतानंदस्वामी के समय में एक दरबार थे। सपने में उसे यम मारने के लिए आए। गुजरात के जितने भी तीर्थस्थान थे, सपने में वह वहाँ सभी जगह घूमा। भागते-भागते जूनागढ़ मंदिर के बड़े दरवाजे में घुस गया! दूर से गुणातीतानंदस्वामी ने हाथ हिलाया तो यम वापिस चले गए। दरअसल वह तो बिस्तर में था, उसे कपड़े भी साफ़ करने पड़े। फिर उसने अपने चाचा से कहा कि मेरे साथ उन स्वामी को ढूँढने चलो, जो एक बड़े दरवाजे में खड़े थे। घूमते हुए गुणातीतानंदस्वामिजी के पास आए, तब स्वामी ने संतों के पूछने पर बताया कि जब यहाँ कोई नहीं था और वे गाँव में घूमते थे, तब इस दरबार ने बाजरे की एक रोटी खिलाई थी। तुम विचार तो करो, एक रोटी खिला देने पर ही इतना काम हो। इन संतों ने प्रगट की भक्ति की है। ये सभी संत निर्दोषबुद्धि और दिव्यभाव से भक्ति करते हैं...

आज हम निहाल हो गए हैं। मैं तो बहुत घूमता हूँ... संपूर्ण विश्व में आप ढूँढ आना; **मुझे और आपको जो पुरुष मिले हैं, दुनिया में कहीं नहीं मिलेंगे...** यह प्रगट भगवान का प्रताप है। यह कोई सामान्य बात नहीं है... हम जैसे-जैसे नज़दीक जाएँ, आनंद आता है। हज़ारों वर्ष पहले की शबरी को हम याद करते हैं। न तो हमारी नात, न जात; तो भी उसे याद करते हैं। पर इन संतों के जैसे संत कहीं नहीं मिलेंगे। आज हम प्रार्थना करें कि इनके खूब नज़दीक आएँ। केवल बोलने के लिए नहीं, कहने के लिए नहीं। लेकिन किसी प्रकार का अंतराय रहे नहीं और प्रगट की भक्ति हम हृदय से कर सकें, यही प्रार्थना।

पू. प्रेमस्वामिजी (हरिधाम)

...साधक के लिए जीवन में **जैसा अंदर वैसा ही बाहर रहना** बड़ी कठिन बात है। **गुरुजी के जीवन में** यह **सहज देखा है...** हममें से कोई भी योगीजी महाराज या काकाजी महाराज या पप्पाजी महाराज या स्वामिजी के पास नहीं आए थे, वे हमारे जीवन में आए हैं। काकाजी हमेशा कहते थे और जो यहाँ लिखा हुआ

भी है – आप यहाँ आए हो न, बस इतना ही काफ़ी है, अब आप बेफिक्र हो जाइए। योगीजी महाराज के उसी भरोसे पर गुरुजी ने अपना पूरा जीवन बिताया है। आज इनके द्वारा महाराज कैसे-कैसे काम कर रहे हैं!

...गुरुजी संबध देख कर जी रहे हैं। योगीजी महाराज के अल्प संबंध वाला कोई भी आया हो, उसके पास वे अपने आपको भूल जाते हैं – यह बहुत बड़ी बात है। अपना 'स्व' को भुला कर अल्प संबंध वालों के मध्य वे किस प्रकार खो जाते हैं, इसका दर्शन भी हम सभी ने किया है। आज हम सब संतों पर ऐसी ही कृपा बरसाएं, आशीर्वाद दें कि संबंध वाली जिस दृष्टि से आप जी रहे हैं, वैसा ही हम सब का जीवन बन जाए...

पू. आचार्यस्वामिजी (पप्पाजी फार्म)

...हम साधु होकर दादर मंदिर आए, तब से गुरुजी के साथ मेरा प्रेमभरा संबंध है। उनकी दृष्टि हमेशा मुझ पर रही है। आज तक भी उन्होंने विशेष रूप से जीवंत रखी है। गुरुजी अपने जीवन में बाजी जीत गए, क्योंकि उन्होंने काकाजी के साथ निष्कपटभाव-अंतरायरहित-खुले दिल का संबंध रखा और पप्पाजी के साथ भी आख़िर तक इसी प्रकार जिए और वर्ते हैं... उन्होंने काकाजी और पप्पाजी की शोभा बढ़ाई और उनके कार्य को खूब विकसित किया। यह देख कर वे अंतर से खूब राजी होते होंगे। यूँ राजी करने की हमें भी प्रेरणा और सूझ देकर आशीर्वाद और कृपा बरसाएँ, ऐसी आज उनके प्राकट्य दिन के पवित्र अवसर पर हमारे सभी संतों की ओर से उनके चरणों में प्रार्थना।

प.भ. गिरीशभाई (पवई)

...३ फरवरी के दिन दासस्वामी ताड़देव में **गुरुजी** का एक प्रसंग सुना रहे थे कि गुरुजी सारे दिन किसी भी कार्य में कितना ही बिजी रहें, लेकिन उन्हें **भजन-प्रार्थना और योगीजी महाराज की इतनी तीव्र अभीप्सा थी कि योगीजी महाराज जब रात को आराम में जाते, तब गुरुजी उनके रूम में बैठकर पूरी रात भजन करते थे...**

हर एक माँ-बाप की इच्छा रहती है कि मेरे बाद मेरा कार्य मेरा पुत्र या मेरी पुत्री या मेरे जो भी हैं, वे आगे बढ़ाए। मन में ऐसी इच्छा तो रहती है, लेकिन वे बताते नहीं है और अपने आप जीवन जीते रहते हैं। उसी तरह से काकाजी, पप्पाजी जीवन जीते ही गए, जीते ही गए, जीते ही गए। लेकिन उनकी इच्छा या अभीप्सा को गुरुजी ने पकड़ा। कल गुरुजी बता रहे थे कि **काकाजी ने 'ए नंबर ऑफ स्पीरीच्युअल टेक्नीक्स' दी हैं! गुरुजी ने उनके शार्टकट्स पकड़े हैं और बहुत ही शार्ट पीरिएड के अंदर काकाजी की प्रसन्नता हासिल कर ली।** फलस्वरूप उनमें काकाजी की दृष्टि आ गई और काकाजी ने गुरुजी को निमित्त बनाया। हम देखते हैं कि बिना बताए, गुरुजी, काकाजी और पप्पाजी के कार्य को धीरे-धीरे, स्टेप बाई स्टेप, एकदम सॉलिड फाउन्डेशन के साथ आज आगे बढ़ा रहे हैं! वैसी ही कृपादृष्टि गुरुजी की हम पर पड़ी है। हम उनकी

फेमिली में आ गए हैं। उन्होंने हमें एडोप्ट किया है। तो वे जो कार्य बढ़ा रहे हैं, उसमें उन्हें साथ तो दें! नहीं दे रहे ऐसा नहीं है, लेकिन उसमें टोटली जुड़ जाना है और सेल्फ रिसपॉन्सिबिलिटी समझकर, जैसे गुरुजी ने समझी, वैसे हम भी उसमें टोटली जुड़ जाएँ। **वह कार्य हम अलग-अलग ढंग से नहीं, बल्कि कलेक्टीवली आगे बढ़ाएँ।** हम देखते हैं कि काकाजी के संबंध वाला कोई है, तो गुरुजी उसके लिए एकदम टोटली समर्पित। फिर वो कोई भी हो, नया हो या पुराना हो। दो साल पहले हमारे घनश्यामभाई कोठारी के जमाई पहली बार यहाँ पर आए थे। सिर्फ दो-तीन दिन गुरुजी के पास रहे। लेकिन आज भी वे गुरुजी का प्रेम याद करते हैं। अभी जब वे स्टेशन पर हमसे मिलने आए थे, तो उन्होंने बताया– भई, **गुरुजी जैसा प्रेम तो अभी तक मैंने नहीं पाया... रिलेशन्स के तौर पर गुरुजी मेरे कुछ भी नहीं लगते और मैं पहली बार गया था, फिर भी इतना प्यार दिया। वो क्या थी कि काकाजी के संबंध वाली दृष्टि...**

पू. महेन्द्रबापू (शिकागो)

...मैंने काकाजी और गुरुजी का संबंध देखा है। कांतिकाका का भी ऐसा संबंध देखा हुआ है; मानो उनका आत्म ठिकाना हों। आज भी अपनी आत्मा के ठिकाने के मुताबिक काकाजी, गुरुजी के हृदय में वैसे के वैसे हैं। **गुरुजी काकाजी का हृदय बन गए हैं...**

गुरुजी के लिए काकाजी ने जो पत्र लिखे हैं उन्हें पढ़ कर यही लगता है कि **काकाजी ने अपना सब कुछ मानो उन्हें अर्पण कर दिया हो, हमने तो अपनी जिंदगी अर्पण की है, लेकिन काकाजी ने सर्वस्व इस पात्र में लगा दिया। गुरुजी का काकाजी के साथ ऐसा आत्मीय संबंध है। काकाजी के साथ वे इतने ओपन थे...** आज भी काकाजी यहाँ दिल्ली मंदिर में हैं। **गुरुजी की धड़कन में काकाजी, काकाजी हैं...** हमारा व्यक्तित्व एक बूंद के भाँति होता है। लेकिन बूंद जब सागर में मिल जाती है, तो सागर बन जाती है; बूंद का निजी अस्तित्व नहीं रहता है। **उसी प्रकार आज गुरुजी का अस्तित्व-व्यक्तित्व काकाजी में समा गया है...**

सब परिवारों को काकाजी ने गोद लिया था। उसी प्रकार यहाँ भी जो-जो परिवार इस मंदिर से जुड़े हैं और जिस-जिस परिवार ने समाज की परवाह न कर, अपने पुत्र-पुत्रियों को गुरुजी को सौंप दिया है, उन सभी परिवारों को गुरुजी ने अपनी गोद में बिठा लिया है, उनको अपने संरक्षण में लिया है। **'सुहृदम् सर्वभूतानां'** गुण उनमें दिखाई देता है। जैसे यहाँ **गुरुजी** काकाजी की मशाल (टॉर्च) लेकर दौड़ते हैं, वैसे ही मुंबई में **भरतभाई, वशीभाई** और अमेरीका में **दिनकरभाई** अपने आपको मिटाकर, काकाजी की ज्योत लेकर दौड़ रहे हैं और जो भी उन्हें सहयोग देता है, उसका कल्याण हो जाता है। **हम यदि गुरुजी के पास, गुरुजी के वचन से जीवन जीएंगे, तो हमारा प्रारब्ध सत्पुरुष बन जाएगा और हमारा सब कुछ भगवान करेंगे...**

✡✡✡

13 मार्च 2011 – प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव की सभा

प.भ. बच्छराजजी (दिल्ली)

काकाजी अकसर कहते–सॅम्पल देखकर माल लेना... मैं प.पू. गुरुजी से करीब सेवेन्टी सिक्स से जुड़ा हुआ हूँ। जिसने भी गुरुजी की तन, मन या धन से सेवा की है या उनके प्रति सद्भावना रखी है, उसने जीवन में रोज उत्तरोत्तर प्रगति होती देखी है। **ऐसा एक भी केस नहीं देखा, जो गुरुजी की शरण आया हो और उसे गुरुजी ने सुखी न किया हो...** गुरुजी के कई कार्य ऐसे हैं जिनका वर्णन किए बिना इन्सान रह नहीं सकता। मिसाल के तौर पर मेरे बेटे अभिषेक को हमेशा के लिए जब मंदिर आना था, तब वह शायद पंद्रह-सोलह साल का था। उसने मुझसे कहा–पापा, मुझे गुरुजी के साथ जीवन जीने का मेरा मन है। मैंने कहा कि यदि आपका मन है और गुरुजी की स्वीकृति है, तो मेरा और मम्मी का पूरा सहयोग तुम्हें मिलेगा। स्वाभाविक रूप से मन में एक भावना है कि बच्चे पढ़-लिख कर कुछ मॅच्योर होकर इस रास्ते पर चलें, पर ये हमारे लौकिक मूल्यांकन है। यह बात इसलिए बता रहा हूँ कि **बड़े संत की क्रिया जो हमें माननी चाहिए, हम नहीं मानते। उसका प्रोसेस जब लेन्धी बन जाता है, तो तुरंत मान जाते हैं।** हमने तुरंत अभिषेक को मंदिर जाने की आज्ञा दे दी। मुझे काकाजी की बात याद आई कि हम गलत कर सकते हैं, हमारे समझने में कसर रह सकती है; लेकिन गुरुजी इसे ले रहे हैं, तो इसकी कोई बात अलग होगी। **आज हृदय मेरे साथ रहता है और अभिषेक सबके साथ रहता है। दोनों सत्संग के बच्चे हैं, लेकिन अभिषेक सत्पुरुष की तरफ नज़र रखकर जिस प्रकार जीवन जीता है, वो आज सब के लिए मिसाल बन गया है, क्योंकि उसके शिल्पी गुरुजी हैं...**

गुरुजी हमसे जैसा अनुशासन रखवाना चाहते हैं, वो प्रशंसनीय है। हमारी कई आसक्तियाँ ऐसी हैं जिन्हें हम लोक-लाज के कारण छोड़ नहीं पाते। दरअसल **साधु की लड़ाई हमारी वृत्ति से होती है, जीव से नहीं।** मेरे बेटे हृदय की शादी में कुछ प्रसंग ऐसे बने कि जिनसे संबंधों को मैंने सालों से संभाल कर रखता था, उन संबंधों से पंद्रह मिनट में गुरुजी ने मुझे मुक्त कर दिया। मैं इतना ऋणी हूँ कि उसका वर्णन नहीं कर सकता। **बिना मतलब की जो आसक्तियाँ हमसे चिपकी रहती हैं, वे साधु को पसंद नहीं आतीं।** यदि सत्संग में टिकने की भावना से हम भजन का सहारा लें और सोचें कि गुरुजी मुझे जो बता रहे हैं, वो मेरी आत्मा के कल्याण के लिए बता रहे हैं, तो गुरुजी अंदर से प्रसन्न होते हैं... **गुरुजी का निष्कपट-निखालस स्वभाव है; वे जो बोलते हैं वही करते हैं।** मुझे आज गुरुजी से हाथ जोड़कर यही माँगना है कि गुरुजी यहाँ पर हम वक्ता आपसे जो भी प्रार्थना-याचना करें, वो सच्चे मन से करें। कई वक्ताओं ने कल कहा कि गुरुजी, काकाजी की बात को पकड़ कर चले हैं। काकाजी और पप्पाजी का भरोसा करके गुरुजी ने जो कार्य किए हैं, आज जब उसका परिणाम हम देखते हैं कि वाह-वाह गुरुजी ने कैसे-कैसे दुर्लभ व असंभव लगने जैसे काम किए हैं। गुरुजी को अपनी कोई प्रशंसा नहीं चाहिए। गुरुजी हम भी आपके जैसी निष्ठा से अपना जीवन आपके पास रखें... आप हमसे जो उमंग रखते हो, वो उमंग कभी हमारे व्यवहार से कमजोर न हो, ऐसा जीने का बल सभी को आप देते रहो–इतनी मेरी प्रार्थना है।

प.भ. बारिन्द्रभाई (ब्रह्मज्योति)

…मैं वैसे तो लंडन में रहता हूँ, लेकिन अभी गुजरात में मैं सेटल हुआ हूँ। अनुपम मिशन के पू. साहेबजी से आप सब परिचित हैं… करीब आठ साल पहले पू. साहेबजी से मेरा मिलन हुआ। लंदन की लाइफ स्टाईल से मैं बिल्कुल ओतप्रोत था। मुझे संगीत का शौक है। सो, मैं उनसे मिलने नहीं, भजन सुनने के लिए गया था। बे-इरादा नज़र उनसे टकरा गई और जिन्दगी में अचानक बहार आ गई। वाकई, गुरु से मेरा फर्स्ट साईट लव हुआ। **जीवन में नई राह मुझे मिली।** मुझे भक्ति में कोई विशेष दिलचस्पी नहीं थी। **भगवान में श्रद्धा रखता था, लेकिन भक्ति इतनी साइन्टिफिक हो सकती है, यह कभी सोचा न था।** भक्ति में इतना आनंद आता है, यह मुझे अपने गुरु से प्राप्त हुआ। मेरे जीवन में तो गुरु ने बहुत ही आनंद भर दिया। और तो और, मेरी सारी फॅमिली को भी ऐसा ही प्रतीत हुआ। मैं ये बताना चाहता हूँ कि **गुरु का हमारे जीवन में खूब ही महत्त्व है। भगवान भजने का, जीवन का जो संपूर्ण-सर्वोच्च आनंद है, वो गुरु के बिना नहीं मिलता है।** आज हमारे गुरुजी के प्राकट्य दिन पर हम सब एन्जॉय कर रहे हैं। तो सबको मैं धन्यवाद देता हूँ।

पू. वशीभाई (पवई)

…आप दिल्ली वाले बहुत लकी हो। शुभ घड़ी में योगीबापा ने संकल्प किया होगा कि यमुना किनारे अक्षरपुरुषोत्तम का मंदिर बने। काकाजी ने वो झेला और गुरुजी को निमित्त बनाकर स्वामिनारायण मार्ग, अक्षरपुरुषोत्तम मंदिर, ३ फरवरी पार्क, अक्षरज्योति सब हो गए। उधर प्रमुखस्वामी महाराज ने हिन्दुस्तान की भूमि के राजतिलक के ऊपर **'अक्षरधाम'** बना दिया। ये दोनों घटनाएं देखो – योगी महाराज की कितनी कृपा, वहाँ और यहाँ गुणातीतभावना वाले साधु…

अभी पाँच-छः-सात तारीख को हमने भजन रखा था, उसमें काकाजी द्वारा बताई टेक्निक्स की बात की। **छोटी-छोटी टेक्नीक्स लेकर काकाजी ने जो काम किया है, उसके ऊपर गुरुजी ने डॉक्टरेट ले ली है। ये सब टैक्नीक्स यहाँ सेवा में दिखती हैं… गुरुजी ने इतने साल यहाँ रहकर गुणातीतभावना वाले साधु बनाए – जो हमारा उद्देश्य है। वो छोटे से छोटे बच्चे से लेकर बड़े-बड़े व्यक्ति के मन में यह बात कूट-कूट कर भर दी है।** भजन करते हुए काकाजी का **'अक्षरधाम की करन्सी'** का कार्ड जब हरिप्रसादस्वामी ने देखा, तो वे इतने ख़ुश हो गए कि दो सौ कार्ड और मंगवाए। अक्षरधाम की करन्सी 'भजन' है, गुणातीत की करन्सी 'दासत्व' है। ये बात गुरुजी ने जन सुलभ बनाई। गुरुजी का क्या है कि काकाजी के अल्प संबंधी के लिए सब कुछ करना…

…अभी पवई में, स्वामिनारायण गुरुकुल राजकोट के बड़े संत माधवप्रियस्वामी आए थे। वे पधरामनी के लिए ही पवई आए थे और उन्होंने कहा था कि सिर्फ पाँच मिनिट के लिए आऊँगा। वे मंदिर में आए और उन्हें बहुत अच्छा लगा। वे बोले – बहुत सर्वदेशीय हो आप, सब की मूर्तियाँ रखी हैं। उन्हें वाइब्रेशन्स भी अच्छी लगी। फिर दूसरी मंज़िल पर गए। वहां काकाजी की फोटो है। उसमें हरिधाम में जो कलश चढ़ा था, उसके बारे में लिखा है कि राजा! एक कलश तो चढ़ गया, अभी गुणातीतभावना का कलश चढ़ाना है। यह देखकर वे वहीं ठहर गए। 'राजा' शब्द उन पर खूब असर कर गया। वे नीचे आए और बोले -- अब मुझे जाना नहीं है। हम

थोड़ी कथा करते हैं-बैठते हैं। उन्होंने भजन बोला–'शीदने रहिए कंगाल रे संतों, शीदने रहिए कंगाल...' और भजन समझाया। साहेबजी को फोन भी किया और कहा– राजा, ये बच्चे लोग बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। इधर मंदिर बहुत अच्छा है, मुझे मालूम ही नहीं था। देखो, **काकाजी का सिर्फ एक फोटोग्राफ! आज भी मुमुक्षु को कैसे खींचता है!**

बापू ने सुबह बहुत अच्छी बात बताई कि कांतिकाका एन्ड गुरुजी के लिए, काकाजी वॉज़ एवरीथिंग फॉर धेम। एक्चुअली बापू भी ऐसे ही हैं। काकाजी ने इन्हें भी बहुत-सी रहस्य की बातें बताई हैं। तो गुरुजी ऐसा लाभ दें कि आपको जो करवाना है, उसमें हम जुड़ जाएँ और काकाजी का जो सिद्धांत है, हम उनके परिचय बनकर जिएं, हम उनका प्राण बनकर जिएं ऐसी बल, बुद्धि और प्रेरणा दें–यही प्रार्थना।

पू. दासस्वामिजी (हरिधाम)

मैंने मुकुंदस्वामी के पूर्वाश्रम के दिलीपभाई के रूप में दर्शन किए थे। मुंबई के जिस भी कॉलेज में वे दाखिल हुए, उस कॉलेज में उन्हें कभी दोबारा एड्मीशन नहीं मिला... आज योगीजी महाराज के संकल्प से, काकाजी महाराज के आशीर्वाद से वे ऐसे मानसपुत्र बने हैं कि वे किसी को डिसमिस नहीं करेंगे। ब्रह्मविद्या की कॉलेज में वे एडमिशन दे देंगे और इसकी डिग्री उसे दिलवाएंगे। ऐसे दिलीपभाई में से वे ऐसे गुरुजी हुए हैं...

गुरुजी हमारी कैसी केयर करते हैं; हमारा कितना जतन करते है, उसके मैं दो एक्ज़ाम्पल अपने जीवन के बता रहा हूँ। नाइन्टीन एट्टी फाईव की मकरसंक्रान्ति की झोली माँगने के लिए काकाजी और स्वामीजी महाराज ने मुझे उत्तमस्वामी की सेवा में भेजा था। मकरसंक्रान्ति की झोली का प्रोग्राम तो पूरा हो गया, लेकिन मुझे सर्दी-जुकाम हो गया, खाँसी थी। कोई ऐसी दवाई खा ली गई जिससे तीन दिन तो मुझे लगातार वॉमीट हुईं और चक्कर आने लगे। तीन चार किलो वज़न कम हो गया और पैरेलॅटीक अटैक जैसा लगा। उत्तमस्वामी भी बहुत घबरा गए। उन्होंने तुरंत मुझे गुरुजी के पास भेज दिया। गुरुजी ने कहा–यहाँ रहो और कुछ चिंता मत करो। तबियत अच्छी हो जाने के बाद जब तुझे लगे कि मुझे जाना है, तब यहाँ से तुझे भेजेंगे। गुरुजी ने मुझसे कहा–**'दासस्वामी, आप जैसे योगीबापा के संत की सेवा करने का मौका मुझे मिला है।'** ये गुरुजी का जतन है...

'धी डिवाईन ग्रेस' की किताब काकाजी गुरुजी से लिखवाते थे। गुरुजी दिल्ली से ताड़देव आते-जाते रहते थे। मैं ताड़देव में ही संस्कृत पढ़ रहा था... काकाजी ने गुरुजी से कहा–ये सब लेकर दिल्ली जाओ। इंगलिश बुकलेट है, आप वहीं छपवा लो। गुरुजी मेरे पीछे पड़ गए कि तू मेरे साथ चल। काकाजी द्वारा लिखे मॅटर में मैं भला क्या कुछ करने वाला था, लेकिन गुरुजी ने ज़िद्द पकड़ ली। मुझसे कहा कि ये परीक्षा तो चलती ही रहेगी। उन्होंने स्वामिजी से भी कह दिया कि मैं इसको ड्रॉप दिलवा देता हूँ और यह मेरे साथ दिल्ली जाएगा। काकाजी ने भी कह दिया – चलो-चलो गुरुजी के साथ दिल्ली जाओ, 'धी डिवाईन ग्रेस' की बुकलेट पूरी करो... यहाँ भी गुरुजी ने प्रेस व व्यक्ति बता दिया और बोले प्रूफ भी तुम करेक्ट करो, सब कुछ करो। वो आराम से सोफे पर बैठे रहते थे। मैंने सोचा, यह भी कमाल की बात है। लेकिन **गुरुजी तो गुरुजी हैं।** बुक छप गई और मैं वापिस आ गया।

अब सोचता था कि क्या करें। गुरुजी स्पेश्यली दिल्ली से सोखड़ा आए और मुझे साथ लेकर बम्बई आए और बोले तुम अपनी स्टडी जारी रखना। मैं भवन के डायरेक्टर जे.एस. मेहता और वाइस प्रिन्सीपल भाईशंकर से मिलता हूँ। पन्द्रह बीस दिन के बाद तेरी स्पेश्यल एक्ज़ाम ले लें, ऐसा प्रबन्ध करता हूँ। तू चिन्ता मत कर। मैं तो सोचने लगा कि भवन की हिस्ट्री में ऐसा कभी हुआ नहीं होगा। वे मुझे लेकर गए और डायरेक्टर एवं वाइस प्रिंसीपल से कहा–हमारे दासस्वामी संस्कृत पढ़ते हैं, इनकी तबियत बहुत खराब थी। सो, दिल्ली में इनका ट्रीटमेन्ट कराना पड़ा–ऐसी परिस्थिति थी। ये अब परीक्षा देना चाहते हैं; ये अच्छे अंक लेकर पास होंगे, पहले पाँच क्रमांक में आएँगे। लेकिन इसके लिए आपको स्पेश्यल पेपर निकालने पड़ेंगे। गुरुजी के कहने पर भाईशंकर ने स्पेश्यल पेपर सेट करवाए, स्पेश्यल परमिशन भी दी और गुरुजी ने मुझसे कहा कि तू जो पढ़ेगा, वही एक्ज़ाम में आए, ऐसी मैं प्रार्थना करता हूँ। ऐसा ही हुआ मैं एइटी थ्री परसेन्ट अंक लेकर पास हुआ।

आप सब जो गुरुजी के चरणों में, उनकी निश्रा-समागम और दर्शन, स्पर्श, सेवा एवं संबंध लाभ ले रहे हैं, उन सभी को मैं **अपने ये दृष्टांत से भरोसा दिलाता हूँ कि वे हमें कभी बीच में नहीं छोड़ेंगे। ऐसे समर्थ सारथी आपको मिले हुए हैं।**

हॉल के दर्शन पहली बार किए। उसमें जो अद्‌भुत हिस्टोरिकल प्रसंग लिखे हुए हैं, उनमें से प्रत्येक में काकाजी महाराज और गुरुजी के एक विशिष्ट संबंध का दर्शन हो रहा है। वही संबंध, खास करके **हमारी दिल्ली योगी डिवाईन सोसायटी कहो या जो भी कहो सत्संग मंडल की एक बहुत बड़ी समृद्धि है- सच्ची सम्पत्ति है।** काकाजी ने जामुन के पेड़ की पूजा करते हुए जो आशीर्वाद उन्होंने दिए हैं, वे आज साकार होते हम देख रहे हैं... हमारा बहुत बड़ा सौभाग्य है कि हमें काकाजी महाराज, पप्पाजी महाराज, हरिप्रसादस्वामिजी महाराज, अक्षरविहारीस्वामी महाराज, साहेब जैसे गुणातीत पुरुषों की निश्रा मिली, उनकी गोद मिली। फिर गुरुजी, कोठारीस्वामिजी, निर्मलस्वामिजी, शास्त्रीस्वामिजी, प्रेमस्वामिजी, निष्काम स्वामिजी, भरतभाई, वशीभाई, बापू, दिनकरभाई ऐसे सत्पुरुषों की–ऐसे भगवदी संतों की निश्रा मिली, उनकी छत्रछाया मिली। तो हमें अब करना क्या है? जो गुरुजी ने किया...

एक बार गुरुजी से योगीबापा ने कहा था–मकंद मगन रहो, मतलब आनंद में रहना-मस्त रहना और कुछ चिंता मत करना। मगन रहना, यह आसान बात नहीं है... लेकिन वे रहे; उन्होंने वह भरोसा, विश्वास रखा, मन-बुद्धि के परे का विश्वास योगीबापा और काकाजी में रखा। तो आज वे सैकड़ों परिवारों को मगन रख सकते हैं-रखते हैं। वे शास्त्रीजी महाराज-योगीबापा के संकल्प और काकाजी के प्रति भक्ति के परम आशीर्वाद व अपनी निष्ठा से निमित्त बने। इन टोटालिटी काकाजी महाराज के आदेश- संकल्प से गुरुजी ऐसे सर्वोपरि निमित्त बने...

सालों से हमने देखा है कि रातभर जगकर वे भजन-तपस्या करके सबको मगन रखते हैं। तो आज के मंगलकारी-ऐतिहासिक दिन यह प्रार्थना जरूर करूँगा कि जिस रीति से वे सर्वोपरि निमित्त बने; और संजोगवश आज १२५ संत पहली बार दिल्ली और उत्तराखण्ड की यात्रा के लिए आए हुए हैं। आसोज से यात्रा शुरु हुई और आज के दिन दिल्ली में यात्रा पूरी हो रही है–तो मैं इस यात्रा की पूर्णाहूति में एक प्रार्थना करना चाहता हूँ ... गुणातीत पीढ़ी का काम खासकर दिल्ली में आप जो बढ़ा रहे हैं, उस तरह हमें जिस क्षेत्र में जहाँ भी जिस

भी खेत या गौशाला में या अमेरिका में कहीं भी, जहाँ जिस भी क्षेत्र में सेवा सौंपी जाए, उसमें हम आप जैसे सर्वोपरि निमित्त बनें और यहाँ के मंडल के लिए मैं एक नम्र सुझाव जरूर रखूँगा कि–

भले ही आपने योगीजी महाराज के दर्शन न किए हों, भले ही आपने काकाजी महाराज के दर्शन न किए हों, लेकिन गुरुजी के दर्शन, समागम और आशीर्वाद एवं उनके कहे मुताबिक जीवन जीने में सभी गुणातीत पुरुषों के आशीर्वाद आ आपको मिल गए।

आशीर्वाद हम निरंतर प्राप्त करें–यही सभी महापुरुषों के चरणों में प्रार्थना।

प.भ. चाँदप्रकाशजी (दिल्ली)

... गुरुजी के चौहत्तरवें जन्म दिवस पर भूरि-भूरि मुबारकबाद देता हूँ। उसके लिए मुझे एक बहुत पुराना शेर याद आता है–

हज़ारों वर्ष नरगिस अपनी बेनूरी पर रोती है; बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।

विज़नरीज़ और बहुत बड़ी-बड़ी आत्माएं आती तो हैं इस प्लेनेट पर, बट इट इज़ ए रेयर साइट।

...मुझे बड़ी ख़ुशी है कि इनका सान्निध्य मिला है। मैं कम से कम पैंतीस साल से गुरुजी के संपर्क में हूँ और **काकाजी इन्हें मुझे भेंट में दे गए।** ए-१०३ के मंदिर से मेरा सफ़र शुरू हुआ। मुझे उर्दू की एक कविता का मुखड़ा याद आता है–

कहाँ से बात निकली थी, कहाँ तक बात जा पहुँची; समझ भी दिले नादान कहाँ तक बात आ पहुँची। कहाँ एक छोटे से घर में मंदिर और आज इतना विशाल मंदिर! साथ में तीन फरवरी पार्क! यह सब देखकर तबियत खुश हो जाती है और मैं गुरुजी की विशालता, उदारता का एक्ज़ाम्पल दूँ। दासस्वामी ने बहुत बढ़िया कहा, उसके आगे तो कुछ और कहने की जरूरत नहीं है। लेकिन एक ताज़ा वाकया आपको सुनाता हूँ। ७ मार्च को मैं यहाँ आया था। काकाजी की स्मृति में यहाँ एक समारोह था। मैं अब गुड़गांवा चला गया हूँ, तो मैंने गुरुजी से कहा कि मैं जल्दी चला जाऊँगा, रात को मुझे गाड़ी चलाने में दिक्कत होती है। तो वे कहने लगे–कोई बात नहीं, हम आपको घर भेजने का प्रबन्ध कर देंगे। इन्होंने मंदिर के दो सेवक और दो ड्राईवर मंदिर की गाड़ी लेकर मेरे साथ भेजे। एक ड्राईवर मेरी गाड़ी चला कर ले गया और मंदिर की गाड़ी में मैं गया। मुझे और मेरी गाड़ी को घर पर छोड़ कर मंदिर की गाड़ी दूसरे ड्राईवर को लेकर वापिस आई। बताइए, ऐसे संत का इससे बड़ा मैं आपको क्या सबूत दे सकता हूँ।

प.पू. भरतभाई (पवई)

...हम सत्संग में काकाजी के पास जब से आए, तब से गुरुजी का जीवन देख रहे हैं। काकाजी जब भी दिल्ली से लौटते और उनका मैं दर्शन करता, तो उनके चेहरे पर एक अलग आनंद दिखाई देता! गुरुजी दिल्ली से जो खत लिखते और काकाजी को जब वह मिलता तो वे तुरंत पढ़ते थे और उनके मुखारविन्द पर जो आनंद होता था, वह अलग ही होता था...

काकाजी को निहारने की उनकी प्रतिभा, विचक्षण बुद्धि-दृष्टि कोई अलग ही है... जो भी भक्त

आते हैं–दो दिन के लिए आएँ, एक दिन के लिए आए या थोड़े घंटों के लिए आएं और जब वे यहाँ आकर गुरुजी के सान्निध्य में रहते हैं और इधर का दर्शन करते हैं, इससे उनका अंतर भर जाता है–यह देख कर कि कैसा समाज तैयार किया है। ऐसा समाज तैयार करने के पीछे गुरुजी का जो परिश्रम है, वो बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। यज्ञप्रियस्वामी ने बताया कि **'महापूजा'** करना सिखाया और हर एक महापूजा के बाद में, मैं कहाँ गलती करता हूँ, मुझे क्या सुधारना है उसके लिए वे हमेशा प्रयत्न करते रहते थे। गुरुजी उन्हें बताते कि महापूजा में आपको क्या चेइन्जीज़ करने हैं! कहने का मतलब यह है कि परफेक्शन पर ले जाने के लिए वे सारा परिश्रम करते हैं...

गुरुजी एक ऐसे संत पुरुष हैं, जो काकाजी के स्वरूप हैं और जिनके पास अनेक शक्तियाँ हैं। **... गलती दिखाने के लिए हजारों आदमी मिल सकते हैं, क्रॉस करने के लिए हजारों आदमी होते हैं, मगर उन गल्तियों को सुधारने के लिए गुरुजी जैसे संत पुरुष मिलने चाहिए और वे हमें मिले हैं।** हम बहुत ही भाग्यशाली हैं... **गुरु का पूर्ण रूप से स्वीकार करें, तभी गुरु को अच्छा लगेगा कि मैं उसे गलती दिखाऊँ और सुधार करवाऊँ।** इसलिए आज मैं सभी भक्तों को भी धन्यवाद देता हूँ कि गुरुजी का ऐसा सभी भक्तों ने स्वीकार किया है... हम यहाँ आने के लिए मुंबई में लिस्ट बना रहे थे, तो करीब पचास-साठ मुक्त हो गए जिन्होंने कहा कि हमें दिल्ली फंक्शन में जाना है। उन्हें गुरुजी के प्रति ऐसा एट्रेक्शन है कि भई तेरह तारीख के गुरुजी के प्राकट्य दिन में जाना है और यहाँ आकर बहुत कुछ मिलता है। कोई ऐसे ही तो आता नहीं है...

गुरुजी ने टेक्नीक भी बताई है कि 'स्वामिनारायण, स्वामिनारायण...' भजन जो कार्ड में बताया है वह अक्षरधाम की करन्सी है और ऐसा भजन हम हर पल, हर मोमेन्ट में करते हो जाएँ और अगले साल जब हम यहाँ आए, तो जितने भी लोग आए हैं, वे इसी तरह से जीवन जीते हो जाएं–यही गुरुजी सबको आशीर्वाद दें–ऐसी प्रार्थना।

श्री हरिशंकर गुप्ताजी (दिल्ली)

मेरी कोई हैसियत नहीं कि मैं आप लोगों के मध्य में कुछ कह सकूं। लेकिन गुरुजी का मर्म-र्स्पशी स्नेह शक्ति देने लगता है कि कुछ चन्द बातें मैं आपसे जरूर कहना चाहूँगा... पिछले वर्षो में मैं निरंतर यहाँ गुरुजी का आशीर्वाद लेने आता रहा हूँ और अन्तर्मन से **एक बात महसूस करता हूँ कि कहीं न कहीं जो मन में एक रिक्तता थी, उसको भरने में मुझे कामयाबी मिली...**

मैं तो इस क्षेत्र का प्रतिनिधि होने के नाते से हमेशा ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ कि गुरुजी दीर्घायु हों, सदैव स्वस्थ रहें और हमारे क्षेत्र में सब लोगों को उनका पवित्र आशीर्वाद प्राप्त होता रहे! यह क्षेत्र स्वस्थ रहे, सम्पन्न रहे–यही हमेशा मेरी ईश्वर से कामना रहती है। मैं तो **रवि गुप्ताजी** का बहुत आभारी हूँ कि उनके माध्यम से, ईश्वर की कृपा से मुझे गुरुजी का सान्निध्य मिला है... आपने सम्मान दिया, बुलाया उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

प.पू. गुरुजी

सबसे पहले तो खूब आनंद की बात यह है कि हमारे इतने सारे संत लोग – जो पंजाब से हरिद्वार आदि जगहों पर विचरण करते हुए यहाँ आए, हमें फंक्शन में इनके दर्शन का लाभ मिला... **कोठारीस्वामी से प्रार्थना कि अगले साल पंजाब के विचरण के लिए वे भले न जाएँ, लेकिन सभी संतों को लेकर यहाँ जरुर आएँ।** इसी तरह **ज्योत से बहनें** आए, **हरिधाम से** भी **बहनें** अवश्य आएँ, क्योंकि अगले साल जो फंक्शन है, उसे हम मार्च में नहीं, फरवरी में करेंगे; क्योंकि **३ फरवरी को काकाजी के साक्षात्कार की हीरक जयंती है,** जो सारे गुणातीत समाज का फंक्शन है। उसी में आख़िरी दिन मेरा बर्थडे भी सेलीब्रेट कर लेंगे।

अभी **दासस्वामी** जो कह रहे थे, वो बात मुझे थोड़ी खटक गई... उन्होंने ज़िकर किया – 'पिछले साल आप सब ने मिल कर हरिप्रसादस्वामिजी को नेता चुना...' अरे! ये कोई नेता थोड़े ही चुनना था? स्वामिजी को तो जोगी महाराज नेता बनाकर गए हैं। जब स्वामीजी को दीक्षा दी, तब दो बड़ी रिमार्केबल बातें बापा बोले थे। **हम लोगों को तो ख्याल भी नहीं था कि बापा ये बोले थे कि –**

जेवी डभाणमां गुणातीतानंदस्वामी ने महाराजे दीक्षा आपी, एवी आजे प्रभुदासने अपाय छे...

और दूसरा –

बीजु इंजन लाग्युं।

इंजिन कोई ऑर्डिनरी बोगी नहीं है कि पैसेन्जर्स बढ़ गए हैं, तो एक्स्ट्रा कोच लगा दें। यूँ एक इंजन एक्स्ट्रा लगा दिया था, ऐसा नहीं है। एंजीन तो पूरा लोड खींचने की कैपेसिटी वाली मशीनरी है।

काकाजी ने उस समय यह सुना था और हम सबको बताया था कि बापा ऐसा बोले हैं।

यूँ ये हरिप्रसादस्वामिजी तो हमारे अनादि के नेता हैं, चुने हुए नहीं हैं और...हम सबके वे पहले से साझे ही हैं।

...काशीरामभाई राणा सूरत से यहाँ तक फंक्शन के लिए आए। ये दिनकरभाई का रूपित अभी काकाजी की परिक्रमा करके गए, फिर आए; उसको मजा भी बहुत आया। साहेब आने वाले थे लेकिन वे नहीं आए। जब साहेब का प्रोग्राम कैन्सल हुआ, तो मैंने पूछा भी कि क्या अब बाकी के सब भी नहीं आएंगे; क्योंकि, यह तो नेचरल है कि सब साहेब के पीछे-पीछे आते हैं। साहेब ने कहा – नहीं, खाली हम चार जनें नहीं आ रहे हैं, बाकी सब भाई-बहनें आने वाले हैं।

भावना के बिना कोई आता नहीं है। लेकिन जब इस प्रकार की बातें देखते हैं, तो **अपनी जिम्मेदारी भी बहुत बढ़ जाती है।** जैसा कि भरतभाई ने कहा – ऐसे ही कोई नहीं आता, एक सेन्टीमेन्ट से सब जुड़े हुए हैं।

...यहाँ **हम जो ऐसे संत के साथ जुड़े हुए हैं, उसी में हमारा बड़प्पन और सम्मान है। हमारी रक्षा भी ऐसे संत के साथ जुड़े रहने में है। इनके साथ का संबंध ही हमारी गरिमा है।** वर्ना हमारी कोई औकात ही नहीं कि हम इस रास्ते पर चल भी पाएं। 'संबंध' क्या चीज है, मैं समझा कर बात करता हूँ। एक बार काकाजी दिल्ली आए थे। फिर नंदाजी के यहाँ गए और वहाँ से आए। सुबह के आठ-नौ बजे निकले थे, साढ़े बारह बजे वापिस आए।

आते ही तखत पर बैठे, पानी पिया और मुझसे पूछा– तुम्हें किसका संबंध?

मैंने कहा मुझे तो आपका संबंध।

तो पूछते हैं **मेरा संबंध है, तो मेरे गुण आए क्या?**

फिर कहते हैं 'संबंध' किसको बोला जाता है ? निकाल वचनामृत प्रथम ६२।

फिर कहते हैं अगर संबंध है, तो सत्पुरुष के-भगवान के–गुण आते हैं; तुम में आए?

फिर कहने लगे कि **गुण प्राप्त हो जाएँ, तो हम भगवान जैसे समर्थ हो जाएँ। जो चाहें सो करने में समर्थ हो जाएँ।**

तब मैंने पूछा कि ऐसा संबंध कैसे हो? हम तो मानते हैं कि हमारा आपसे संबंध है।

फिर उन्होंने एकदम बात पलटी और बोले कि चार प्रकार के सत्पुरुष हैं।

दीया जैसे, मशाल जैसे, बिजली जैसे, और वड़वानल अग्नि जैसे।

मुसलमानों में इन्हें कहते हैं – **शरीयती, तरीकती, हक़ीक़ती, मारफ़ती** और फिर आख़िर में **अनहलक्।**

फिर बोले, ये लोग जिन्हें शरीयती और तरीकती कहते हैं वे दीए जैसे। हक़ीक़ती मशाल जैसे, मारफ़ती बिजली जैसे और अनलहक् वडवानल जैसे।

मैंने पूछा इसमें **टॉप कौन सा–जो हम बन सकें।**

तो बोले मारफ़ती; फिर कहते हैं– जब मैंने कहा, टॉप मारफ़ती, तो तूने यह क्यों नहीं पूछा कि 'अनलहक' कौन?

मैंने जब यह पूछा, तब खुद ही बोले कि– 'मेरे जैसे।'

फिर कहते हैं **बापा ने क्या फेवर किया है, वो तुम लोगों को पता नहीं है।**

अगर शरीयती और तरीकती यानि–दीए जैसे साधु या संत को 'अनहलक्' का जोग हो जाए और उसे किसी भी प्रकार राजी कर ले, तो देखते ही देखते-पता भी न चले और उसे शरीयती से सीधा 'मारफ़ती' बना दें। मतलब **बिजली जैसा साधु बना दें, बिना किसी साधन के!** बस, अनहलक् को राजी कर लेना पड़े।

मैंने पूछा कि अनहलक् को राजी कैसे करें ?

तो बोले कि एक रास्ता है, अर्जुन की तरह यदि **'अभिप्राय' की भक्ति में जुड़ जाएँ, तो बाकी सभी चीजें वेव ऑफ करके,** वे तुम्हें **उठा कर सीधा वहाँ रख देंगे।**

फिर मैंने पूछा कि **'अभिप्राय'** और **'अनुवृत्ति'** में क्या फर्क ?

'अनुवृत्ति' सत्पुरुष के अंतर का सैद्धांतिक कार्य है – जीवन प्रवाह। संप, सुहृद्भाव, मैत्रीभाव या निर्दोषबुद्धि रख कर वर्तो, वो उनकी 'अनुवृत्ति' !

'अभिप्राय' का अर्थ यह कि ऐसी विभूति एक मिशन लेकर आए होते हैं – जो तुम्हारी बुद्धि में शायद बैठे ही नहीं। जैसे शास्त्रीजी महाराज मंदिर बनवाते थे और... वे सारा कारोबार बाह्यदृष्टि से चलाते हैं, ऐसा लगता था। वड़वानल पुरुष के ऐसे सब कार्य बाह्यदृष्टि वाले ही लगते हैं। फिर भी, **उनमें विश्वास रख कर उनके मुताबिक वर्त लें, तो हमारा काम फटाफट हो जाए।**

मैंने तब जानबूझ कर पूछा कि यह आपकी ढूंढी-कही बात है या वचनामृत में भी प्रमाण है – कहीं लिखा है।

तो बोले– राजा ! **मेरी कोई भी बात स्वामी की बात और वचनामृत से बाहर हो ही नहीं सकती** ; अत्यं का १४ का आख़िरी पेरॅग्राफ निकालो। उसमें है –

ईश्वर मूर्ति ऐसे जो संत, यदि कुछ ढीला-ढाला वर्तता हो, बाह्यदृष्टि से वर्तता लगता हो, लेकिन उसके प्रति यदि हमें दिव्यभाव रहे, तो वो अनंत जीवों को माया से परे कर दे।

फिर बोले – राजा ! **मुफ्त में माल लेना हो तो ले लो, ऐसे मुफ़्त में देने वाले फिर नहीं मिलेंगे...**

ये सारी बातें हमें बहुत समझ नहीं आएँगी। पर **'ऐसे पुरुष हमारे हैं और हम उनके हैं यूँ मान कर उनसे चिपके रहें' – यह एक बात पकड़ रखेंगे,** तो कोई दिक्कत नहीं आएगी।

...एक और बात – **गिरीश** ने सुबह बात की कि काकाजी के संबंध वाले कोई भी आएँ, तो गुरुजी को कोई रिजर्वेशन नहीं है। ऐसा नहीं है, तुम कुछ भूल खा रहे हो। गुणातीत समाज का कोई भी आएगा और उसमें ये काकाजी का मेरे लिए ज्यादा, पप्पाजी का मेरे लिए कम या स्वामिजी का मेरे लिए कम है – यदि **ऐसा भाव मेरे मन में रहे, तो मैं हक़ीक़त में काकाजी का हूँ ही नहीं।** आप सब जानते हो, मेरे दिल कोई इतना विशाल नहीं है, पर मैंने काकाजी से यह बात समझी हुई है–

जब तक सर्वदेशीयता में नहीं जाओगे, एकांतिकी स्थिति की तुम सब बातें भले करते रहो, लेकिन किसी को एकांतिकी स्थिति सिद्ध नहीं हो सकती।

शुक्र है कि यह बात अपने समाज में अब धीरे-धीरे फिर हक़ीक़त में इवॉल्व हो रही है...

कोई बड़ी साधना हमें नहीं करनी है। एकत्वभाव से हम जीते रहें और इन पुरुषों की **'ठंडक'** नहीं, इनके चेहरे का **'आनंद'** हम लूटते रहें-यही करना है...

✡✡✡

આવો દિલ્હી... ૩, ૪, ૫ – ફેબ્રુઆરી ૨૦૧૨

(કાકા હે ! આકાશ છો તમ, બહુ આવો યાદ પ્રીતમ...)

ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણની પ્રગટની યુગલ ઉપાસનાના સ્વરૂપસિદ્ધ,
બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજના રાજદુલારા અને બ્રહ્મસ્વરૂપ યોગીજી મહારાજના પ્રાણજ્યોતિ એવા પ.પૂ. કાકાશ્રી!
એમણે સર્વપ્રથમ ઝંપલાવી અસલી નારાયણને જોયા ને પરમ પૂજ્ય યોગીબાપા રૂપે એ પ્રગટ પ્રભુને ઓળખી-પામી-રાખી-વશ કરી
આપણને ઓળખાવ્યા, આપ્યા ને એમાં રહેતાં કર્યા! પોતાને થયેલા સાક્ષાત્કારની તો જાણે લ્હાણી કરી!
તેથી જ, જોગી જગતના તેઓ સર્જક બન્યા-સુકાની બન્યા!!
આપણ સહુ માટે અરે! અનેક ભક્તો-મુક્તો માટે સંકલ્પ પરની દિવ્યભૂમિકાની પ્રેરણામૂર્તિ બન્યા ને દૃષ્ટાઓના દૃષ્ટા બન્યા!!!
એમને લઈને તો 'યોગી પરિવાર'માંથી પાંગરેલા 'ગુણાતીત સમાજ'માં આજે આપણું સહુનું અસ્તિત્વ છે.
એ **ગુરૂહરિ પ.પૂ. કાકાશ્રીના આ ઐતિહાસિક અને અપૂર્વ સાક્ષાત્કારની હીરક જયંતી** ૨૦૧૨ની ત્રીજી ફેબ્રુઆરીના શુક્રવારે આવી રહી છે.
આપણે સહુ ભેગા મળી **'યોગી પરિવાર હીરક આનંદોત્સવ'રૂપે એ ૨૦૧૨ના શુક્ર-શનિ-રવિવારે એમ ૩, ૪ અને ૫ ફેબ્રુઆરી**ના ત્રણ દિવસ
દિલ્હીના આપણા મંદિરે સર્વે પ્રત્યક્ષ ગુણાતીત સ્વરૂપો, ગુણાતીત સમાજના સહુ જ્યોતિર્ધરોની નિશ્રામાં
અને
દેશ-વિદેશના અનેક મુક્તોની હાજરીમાં અનેરા ઉત્સાહથી ભક્તિભાવપૂર્વક ઊજવીશું.
વળી, બ્રહ્મસ્વરૂપ યોગીજી મહારાજ દ્વારા ૧૯૬૧માં દીક્ષિત ૫૧ યોગેશ્વરો પૈકીના
અને
ગુરૂહરિ પ.પૂ. કાકાશ્રીના દિવ્ય માનસપુત્ર ને સર્વે ગુણાતીત સ્વરૂપોના લાડીલા
ને
અનેક સાધક મુક્તોના આદર્શ તેમજ કુટુંબભાવથી ઓતપ્રોત એવા વિશાળ ભક્ત સમુદાયના હૃદય સિંહાસને વિરાજેલા
ગુરૂ, સુહૃદ્ અને પથપ્રદર્શક એવા આપણાં સહુના વ્હાલા **પરમ પૂજ્ય ગુરૂજીનો ૭૫મો પ્રાકટ્ય દિવસ** પણ આ વર્ષે જ આવી રહ્યો છે.
ગુરૂભક્તિના આદર્શ એવા પરમ પૂજ્ય ગુરૂજીની અંતરની ઈચ્છા અને આજ્ઞાને અનુસરી
એમનો આ ૭૫મો પ્રાકટ્ય દિવસ **આ મહોત્સવ અંતર્ગત જ ૫મી ફેબ્રુઆરીના સાંજે ઊજવીશું.**

પરમ પૂજ્ય હંસાદીદીના શબ્દોમાં – **'કાકા રે, કાકા રે, આજ આવ્યું ટાણું ; નજરાણું તમને દેવાનું...'**

તો, આ દિવ્ય મહોત્સવે સપરિવાર મિત્રમંડળ સહિત **૨૦૧૨ની ફેબ્રુઆરીના આ દિવસોમાં દિલ્હી આવવું રખે ચૂકતા...**
આવો... પધારો... ધન્ય થાઓ...

आओ दिल्ली...

दिनाँक ३-४-५ फरवरी, २०१२ के शुक्र-शनि-रविवार को

गुरुवर्य ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज और गुरुवर्य ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज के
लाड़ले दिव्य मानस सपूत, बृहद् गुणातीत समाज के अजोड़ सर्जक
एवं
हम सभी के प्राणाधार गुरुहरि ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के
ऐतिहासिक और अपूर्व साक्षात्कार की हीरक जयंती महोत्सव
और इसी के अंतर्गत
ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज द्वारा दीक्षित,
ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज एवं सभी गुणातीत स्वरूपों के लाड़ले
व
हम सभी के आदर्श, सुहृद्, पथप्रदर्शक प.पू. गुरुजी का ७५वाँ प्राकट्य दिन मनाने...

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	16.11.'11,	बुधवार	–	गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की दीक्षातिथि
(2)	दि.	21.11.'11,	सोमवार	–	एकादशी – व्रत
(3)	दि.	6.12.'11,	मंगलवार	–	एकादशी – व्रत
(4)	दि.	10.12.'11,	शनिवार	–	चंद्रग्रहण
(5)	दि.	16.12.'11,	शुक्रवार	–	धनुर्मास प्रारंभ
(6)	दि.	21.12.'11,	बुधवार	–	एकादशी – व्रत
(7)	**दि.**	**31.12.'11,**	**शनिवार**	**–**	**2012 – नए वर्ष के उपलक्ष्य में दिल्ली – ताड़देव मंदिर में रात्रि 9:45 से 'मध्यरात्रि महापूजा'**
(8)	दि.	5.1.'12,	गुरुवार	–	एकादशी – व्रत
(9)	दि.	9.1.'12,	सोमवार	–	**पौषी पूर्णिमा, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का दीक्षा दिन**
(10)	**दि.**	**13.1.'12,**	**शुक्रवार**	**–**	**लोहड़ी**
(11)	दि.	14.1.'12,	शनिवार	–	मकरसंक्रांति, धनुर्मास समाप्त, भिक्षा दिन
(12)	दि.	19.1.'12,	गुरुवार	–	एकादशी – व्रत **ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की स्वधामगमन तिथि**

(Air Mail) '**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052